Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ

(सूरत अन्निसा आयत :153)

अनुवाद: और वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलोंबू पर ईमान लाए और उनके अंदर किसी के मध्य मतभेद नहीं किया यही वे लोग हैं जिन्हें वे ज़रूर उसका प्रतिफल प्रदान करेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6
अंक- 8

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12 रजब 1442 हिज्री कमरी 25 तब्लीग़ 1400 हिज्री शम्सी 25 फरवरी 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक प्यारी दुआ

(1120) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब रात को तहज्जुद पढ़ने के लिए उठते तो यह दुआ करते :-

اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْلِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَوْلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

हे अल्लाह मैं ने तेरे हुज़ूर अपनी गर्दन डाल दी है और तुझ पर ईमान लाया हूँ और तुझी पर मैंने भरोसा किया है और तेरी ही तरफ़ मैं झुका हूँ और तेरी ही ख़ातिर मैं ने यह झगड़ा उठाया है और तेरे ही हुज़ूर फ़ैसला चाहा है। मेरी मग़फ़िरत फ़र्मा, उस आगे पीछे करने मेंजो मैं ने किया है और उस में भी जिसे मैं ने गुप्त रखा और जिसका मैं ने इज़हार किया। तू ही मुक़द्दम करने वाला और तू ही अंतिम करने वाला है। कोई माबूद नहीं परन्तु तू ही या (फ़रमाते) तेरे सिवा और कोई माबूद नहीं।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब तहज्जुद, पृष्ठ 510 प्रकाशन क़ादियान 2006)

ख़ुदा से सुलह करो और सच्ची पवित्रता से काम लो। आकाश अपने आदत से हट कर आदतों से डरा रहा है, ज़मीन बीमारियों से सचेत कर रही है मुबारक वह जो समझे।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

तीस हज़ार दुआओं का स्वीकार होना

फिर फ़रमाया कि

"लोग इस बात को भी झूठ जानेंगे। जो हमने लिख दिया है कि मेरी तीस हज़ार दुआएं कम से कम क़बूल हुई हैं परन्तु मेरा ख़ुदा ख़ूब जानता है कि यह सच है और इस में ज़रा भी झूठ नहीं। क्योंकि हर एक काम के लिए चाहे धार्मिक हो या सांसारिक, दुआ की गई है और अल्लाह तआला ने उसे उचित और पवित्र बना दिया है।"

अरबी पुस्तकों में दुआ के प्रभाव

अरबी पुस्तकों में एक एक शब्द दुआ ही का प्रभाव है वर्ना इन्सानी ताक़त का काम नहीं कि चैलन्ज करे। यदि दुआ का प्रभाव नहीं तो फिर क्यों कोई मौलवी या भाषाविद दम नहीं मार सकता। यह अल्लाह तआला का विशेष फ़ज़ल है कि भाषा जानने वालों के रंग और मुहावरा पर हमारी पुस्तकें लिखी गई हैं वर्ना भाषा जानने वाले भी सारे इस योग्य नहीं होते कि भाषा के समस्त प्रमाणित मुहावरों को जानने वाले हूँ अत: यह ख़ुदा ही का फ़ज़ल है।"

2 जनवरी 1899 ई

रिसाला कश्फ़ुल ग़िता की रचना का उद्देश्य

8 बजे दिन के हज़रत अक़दस एक बड़ी संख्या लोगों के साथ सैर को पधारे। इस समय रास्ता में फ़रमाया

"य कष्ट और दुख जो विरोधी कभी बद-ज़बानियों के रंग में झूठ और इफ़्तिरा से भरे हुए इश्तिहारों के माध्यम से और कभी गर्वनमेंट और हुकूमत को घटना के विरुद्ध और केवल झूठी बातों के ब्यान करने से कुधारणा करके हमको दुख पहुंचाते हैं। यदि हमारी अपनी ही ज़ात तक सीमित और विशेष होते हैं, तो ख़ुदा तआला बेहतर जानता है कि हमको ज़रा भी ख़्याल न होता ,क्योंकि हम तो क़ुर्बानी के बकरे की तरह अल्लाह तआला की राह में हर समय तैयार हैं, परन्तु उसका प्रभाव हमारी क़ौम पर पहुंचता है। और कई लोग अभी ऐसे कमज़ोर भी हैं जो इब्तिला सहन नहीं कर सकते, इसलिए हमने उचित समझा है कि इन समस्त हालात को छाप कर गर्वनमेंट के पास भेज दें, क्योंकि यदि हम ख़ामोश रहें तो उधर विरोधी आरोप लगाते हैं। फिर उसका प्रभाव अच्छा नहीं पड़ता। चूँकि हमारे दिल साफ़ हैं और हम बुरे विचार रखने वाले लोगों की तरह धोखा और जी हुज़ूरी से काम नहीं लेते इसलिए हमें पूर्ण उम्मीद है कि यह रिसाला कश्फ़ुल ग़िता गर्वनमेंट को हमारे हालात और हमारी शिक्षाओं से सूचना देगा और हमारे प्रत्येक दोस्त के पास बतौर सार्टीफिकेट के रहेगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

झूठे उपास्य सीमित समय से चले हैं और ख़ुदा के क़ानून सीमित समय से चल रहे हैं
अत: वे काम जो एक निर्धारित क़ानून के अधीन हमेशा से होते चले आए हैं झूठे उपास्यों की तरफ़ नहीं से हो सकते

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूर: यूनुस की आयत 35 قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ तफ़सीर में फ़रमाते हैं :-

"इस आयत में शिर्क के खण्डन में एक बहुत बड़ा तर्क प्रस्तुत किया गया है जिसे आम तौर पर लोगों ने समझा नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सृजन करने वाले का प्रमाण दोहराना होता है अर्थात सृजन(मखलूक) को दोहराना। अन्यथा हर व्यक्ति दावा कर सकता है कि मैं सृजन कर्ता हूँ। आज यदि कोई व्यक्ति उठे और कहे कि मैंने दुनिया पैदा की है तो इसका रद्द इस तरह हो सकता है कि उसको कहा जाए कि फिर पैदा करके दिखाओ। उद्देश्य दोहराना ही कर्म पर क़ुदरत रखने का प्रमाण होता है। अत: फ़रमाता है कि हम केवल लोगों को प्रस्तुत नहीं करते कि कोई कह दे कि हज़रत ईसा ने या और किसी वजूद ने भी पैदा किया है बल्कि हम पुन: करने को प्रस्तुत करते हैं। पुन: करने में दो बातें होती हैं प्रथम उस से तुरन्त परीक्षा लेनी होता है। दूसरा पुन: करना अस्थाई क़ानून को भी बताता है। उदाहरणता अनाज से अनाज पैदा होता चला आ रहा है। आज यदि ज़ैद ख़ुदा बन बैठे और ख़ालिक़ होने का दावा करे तो उसे कहा जाएगा कि अनाज तो शुरू से पैदा हो रहा है और तुम अब पैदा हुए हो। उद्देश्य झूठे उपास्य सीमित समय से चले हैं। और ख़ुदा तआला के कानून पहले से चल रहे हैं। इसलिए प्रश्न हो सकता है कि वे काम जो एक निर्धारित क़ानून के अधीन हमेशा से होते चले आए हैं तुम्हारी ओर किस तरह सम्बोधित हो सकते हैं। अत: फ़रमाया कि यह पैदा करना और पुन: करने का सिल्सिला किस ने बनाया है। यदि कहो कि अल्लाह तआला ने तो बताओ कि जब ख़ुदा तआला ने प्रारम्भ से पैदाइश के कुछ क़ानून निर्धारित फ़र्मा छोड़े थे और उनके अधीन संसार की पैदाइश हो रही है तो तुम्हारे झूठे उपस्यों का दख़ल इस में कहाँ से साबित हुआ और इसकी ज़रूरत क्या थी?

इस आयत में इस तरफ़ भी संकेत है कि जिस बादशाह ने एक बज़ाहिर न खत्म होने वाला सिल्सिला मख़लूक़ को पैदा किया है वह उस

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सबसे ख़ूबसूरत जोड़ा जो किसी इन्सान ने देखा हो हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा और उनके पति हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद, ज़ुन्नूरैन हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्ह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तक़रीबन पाँच वर्ष छोटे थे, आप रज़ियल्लाहु अन्हु पहले इस्लाम स्वीकार करने वालों में से थे

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत रुक़य्या से फ़रमाया! बेटी अबू अब्दुल्लाह के साथ अच्छा व्यवहार करती रहो

निसंदेह यह मेरे सहाबा में आचरण की दृष्टि से मुझसे सबसे ज़्यादा समानता रखते हैं

ग्यारह मरहूमीन आदरणीय मौलाना सुलतान महमूद अनवर साहब पूर्व नाज़िर इस्लाह इरशाद मर्कज़िया, नाज़िर ख़िदमत-ए-दरवेशान और नाज़िर इस्लाह इरशाद रिश्ता नाता, आदरणीय मौलाना मुहम्मद उमर साहब पूर्व नाज़िर इस्लाह इरशाद मर्कज़िया क़ादियान, आदरणीय हबीब अहमद साहब पुत्र मुहम्मद इस्माईल साहब पूर्व अमीर और मिशनरी इंचार्ज नाईजेरिया, आदरणीय ब्दरुज़-ज़मा साहब कर्मचारी वकालत माल यू.के, आदरणीय मंसूर अहमद तासीर साहब कर्मचारी शोबा एहतिसाब नज़ारत उमूरे आम्मा रब्वाह, आदरणीय डाक्टर इबराहीम मुआनिगह साहब तन्ज़ानिया, श्रीमती सुग़रा बेग़म साहिबा पत्नी आदरणीय दीन मोहम्मद साहब नंगली दरवेश क़ादियान, आदरणीय चौधरी करामतुल्लाह साहब पूर्व सेवक अलफ़ज़ल इंटरनैशनल, आदरणीय चौधरी मुनव्वर अहमद ख़ालिद साहब (जर्मनी), श्रीमती नसीरा बेग़म साहिबा पत्नी अहमद सादिक़ ताहिर महमूद रिटायर्ड मुरब्बी सिल्सिला बंगला देश और आदरणीय रफ़ीउद्दीन बट साहब (बद्दू मुल्ही) का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

पाकिस्तान और अल्-जज़ायर के अहमदियों के विरोध के कारण दुआओं की पुनः तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन शुरू करूँगा। कुछ सप्ताह तक यह जारी रहेगा।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में पहली बात तो यह याद रखनी चाहिए कि यह ख़ुद बदर की जंग में में शामिल नहीं हुए थे अलबत्ता उन आठ ख़ुशनसीब सहाबा में शामिल थे जिन्हें नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर की जंग के माले ग़नीमत में हिस्सा देकर जंग में शामिल होना ही क़रार दिया था।

आपका नाम उस्मान बिन अफ्फान बिन अबुलआस बिन उमय्यह बिन अब्दे शम्स बिन अब्दे मुनाफ़ बिन क़ुसिये बिन कलाब है। इस तरह आपके वंश का गोत्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिल्सिला गोत्र के साथ पांचवीं पुश्त पर अब्दे मुनाफ़ पर जा कर मिलता है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की माता का नाम अर्वाह पुत्री कुरैज़ा था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की नानी उम्मे हकीम पुत्री अब्दुल मुत्लिब थीं जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माता हज़रत अब्दुल्लाह की सगी बहन थीं। एक रिवायत के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माता हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की नानी उम्मे हकीम पुत्री अब्दुल मुत्लिब जुड़वां पैदा हुए थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की माता अर्वाह पुत्री कुरेज़ा ने सुलह हुदबिया के बाद इस्लाम क़बूल कर लिया था और मक्का से हिजरत कर के मदीना आ गईं और अपने बेटे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर ख़िलाफ़त में फ़ौत होने तक मदीना में ही रहती रहीं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की माता ज़माना जाहिलियत में ही फ़ौत हो गईं थीं।

(अल् असाबा फ़ी तमीज़िल सहाबा ईमाम हिज्र अस्किलानी, भाग 4 पृष्ठ 377 उस्मान बिन अफ्फान, दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत, 2005 ई.) (सीरत अमीरुल मौमिनीं उस्मान बिन अफ्फान शाख्सीयता व् असरोहू अली मुहम्मद सलाबा, पृष्ठ 15 फ़सलुल प्रथम, अस्मा वंसबा व्कुंनियत, दारुल मारूफ़ बेरूत 2006 ई.) (सैरुल साहबा, भाग प्रथम, पृष्ठ 154 दारुल ईशात कराची 2004ई.) (अल्तब्कातुल कुबरा,भाग 8 पृष्ठ 182 से 183 अर्वाह पुत्री कुरेज़ा, उम्मे कुलसूम बिन उक़बा)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के उपनाम के बारे में कहा जाता है कि जाहिलीयत के ज़माना में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का उपनाम अबू अम्र था। जब हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आपके बेटे अब्दुल्लाह पैदा हुए तो उस की मुनासबत से फिर मुसलमानों में आप रज़ियल्लाहु अन्हु की उपनाम अबू अब्दुल्लाह भी प्रसिद्ध हो गया। (सीरत अमीरुल मौमिनीन उस्मान बिन अफ्फान शाख्सीयता व् असरोहू अज़ अली अलसलाबी,पृष्ठ 15 फ़सलुल प्रथम, मबहसुल प्रथम अस्मा नस्बा व कुन्नियत, दारुल मारूफ़ बेरूत 2006 ई.)

इस्हाक़ के पुत्र के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से की जो बदर के युद्ध के दिनों में वफ़ात पा गए। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी दूसरी बेटी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत उस्मान की शादी कर दी इस कारण से आप रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ुन्नूरैन कहा जाने लगा।

(अल् असाबा फ़ील तमीज़िल सहाबा ईमाम हिज्र अस्कलानी, भाग 4 पृष्ठ 377 उस्मान बिन अफ्फान, दारुल क़ुतुब अल्इलिमया बेरूत, 2005 ई.)

यह भी वर्णन किया गया है कि आप को ज़ुन्नूरैन इसलिए कहा जाता था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु हर रात नमाज़ तहज्जुद में बहुत ज़्यादा तिलावत क़ुरआन करीम किया करते थे चूँकि क़ुरआन नूर है और रात की इबादत भी नूर है इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ुन्नूरैन अर्थात "दो नूरों वाला" के उपनाम से प्रसिद्ध हो गए। (सीरत अमीरुल मौमिनीन उस्मान बिन अफ्फान शाख्सीयता व् असरोहू अज़ अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 16 फ़सलुल प्रथम, अलमबहस प्रथम अस्मा नस्बा व् कुन्नियत, दारुल मारूफ़ बेरूत 2006 ई.)

एक सही कथन के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के जन्म के बारे में यह भी एक रिवायत मिलती है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्ह आमुल फ़ील के छः वर्ष बाद मक्का में पैदा हुए और यह भी कहा गया है कि आप तायफ में पैदा हुए थे। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लगभग पाँच वर्ष छोटे थे। (सीरत अमीरुल मौमिनीन उस्मान बिन अफ्फान शाख्सीयता व् असरोहू अली अलसलाबी, पृष्ठ 16 फ़सलुल प्रथम , अलमबहस प्रथम अस्मा नस्बा व् कुन्नियत, दारुल मअरूफ़ बेरूत 2006 ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में यज़ीद बिन रुमान रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे पीछे निकले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। आपने उन दोनों के सामने इस्लाम का संदेश पेश किया और उन्हें क़ुरआन करीम पढ़ कर सुनाया और उन्हें इस्लाम के हुक़ूक़ के बारे में अवगत किया और उनसे अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलने वाली इज़्ज़त और सम्मान का वादा किया। इस पर वे दोनों, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान ले आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ की। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! मैं हाल ही में शाम के देश से वापस आया हूँ। जब हम माआन और ज़रका के मध्य पड़ाव किए हुए थे। माआन अरदन के दक्षिण में हिजाज़ की सीमाओं के निकट एक शहर है और ज़रका मआन के साथ ही स्थित है। बहरहाल कहते हैं वहां हम पड़ाव किए हुए थे और हम सोए हुए थे कि एक आवाज़ देने वाले ने ऐलान किया कि हे सोने वालो ! जागो। निसन्देह अहमद मक्का में ज़ाहिर हो चुका है। फिर जब हम वापस पहुंचे तो हम ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में सुना। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अर्कम में दाख़िल होने से पहले आरम्भिक इस्लाम लाने वालों में से थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 31 उस्मान बिन अफ्फान, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बैरूत,1996 ई)

(मुअजमुलबुल्दान लेखक ग़ुलाम जैलानी बर्क, पृष्ठ 320, मुअजमुलबुल्दान भाग 3 पृष्ठ 3 पृष्ठ 427, अज़्ज़रका दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

इस्लाम स्वीकार करने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर अत्यचार भी हुए। मूसा बिन मुहम्मद अपनी माता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम क़बूल किया तो आपके चाचा हकम बिन अबुलआस बिन उमय्यह ने

आपको पकड़ कर रस्सियों से बांध दिया और कहा क्या तुम अपने बाप दादा का धर्म छोड़कर नया धर्म धारण करते हो। ख़ुदा की कसम मैं तुम्हें कदापि नहीं खोलूँगा यहां तक कि तुम अपना यह नया धर्म छोड़ न दो। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ख़ुदा की क़सम ! मैं उसे कभी नहीं छोड़ूँगा और न इससे अलैहदगी धारण करूँगा। हकम ने जब आपके धर्म पर मज़बूती की यह हालत देखी तो फिर विवश होकर आपको छोड़ दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 31 उस्मान बिन अफ्फान, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बैरूत,1996 ई)

हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा से जब आपकी शादी हुई तो उस का घटना इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा नुबूव्वत से पहले हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा का रिश्ता अबूलहब के बेटे उत्बा से और उनकी बहन हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का रिश्ता उत्बा के भाई उतैबा से हो चुका था। जब सूरत मसद अर्थात सूरत लहब नाज़िल हुई तो उनके बाप अबूलहब ने उनसे कहा कि यदि तुम दोनों मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की बेटियों से अलग न हुए तो मेरा तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं होगा। ये रिश्ते तोड़ दो। इस पर इन दोनों ने विदाई से पूर्व ही दोनों बहनों को तलाक़ दे दी। इसके बाद हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का में ही हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी कर ली और उनके साथ हब्शा की तरफ हिजरत की। हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों ही ख़ूबसूरती में अपनी मिसाल स्वयं थे। इसलिए कहा जाता है कि اَحْسَنَ زَوْجَيْنِ رَاٰهُمَا اِنْسَانٌ رُقَيَّةُ وَزَوْجُهَا عُثْمَانُ- सबसे ख़ूबसूरत जोड़ा जो किसी इन्सान ने देखा हो वो हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा और इनके पति हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(शरह जरक़ानी ,भाग 4 पृष्ठ 322 से 323 बाब फ़ी वर्णन औलादे इकराम, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1996 ई)

अब्दुर्रहमान बिन उस्मान क़ुरशी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी बेटी के घर तशरीफ़ लाए। वह उस वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर धो रही थीं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेटी अबू अब्दुल्लाह के साथ अच्छा व्यवहार करती रहो। निसन्देह यह मेरे सहाबा में आचरण की दृष्टि से मुझसे सबसे ज़्यादा समान हैं।

(उद्धरित शरह अल्लामा अज़्ज़रकानी अला अल्मवाहेदुल लदुनिया भाग 4, पृष्ठ 322-323 बाब फी ज़िक्र औलाददुल किराम, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत, 1996 ई)

हिजरत की घटना के बारे में इसहाक़ के पुत्र कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि आपके सहाबा को आज़माईश पहुंच रही थी और अल्लाह तआला के साथ मुक़ाम और मर्तबा के कारण से और अपने चाचा अबूतालिब के कारण से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुरक्षित थे। अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो सुरक्षित थे और यह कि जिस आज़माईश में सहाबा थे इसे रोकने की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सामर्थ्य और शक्ति नहीं रखते थे। जबकि ख़ुद तो कुछ हद तक अमन में थे लेकिन सहाबा पर जो ज़ुल्म हो रहे थे उन ज़ुल्मों को रोकने की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ताक़त नहीं थी। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कि यदि तुम हब्शा की ज़मीन की तरफ़ निकलो तो वहां एक ऐसा बादशाह है जिसके पास किसी एक पर ज़ुल्म नहीं किया जाता और वह सच्चाई की ज़मीन है। यहां तक कि अल्लाह तआला तुम्हें इस आज़माईश से बचा ले जिस में तुम लोग हो। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्हाब उपद्रव के भय से और अपने धर्म के द्वारा अल्लाह तआला की तरफ़ जाने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से हब्शा की ज़मीन की तरफ़ रवाना हुए। यह इस्लाम में होने वाली पहली हिजरत थी।

हब्शा की तरफ़ हिजरत करने वाले सहाबा में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी पत्नी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल थे।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 237-238 बाब ज़िक्र अल्हिजरत अल्औला इला अरज़ हब्शा दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हबशा की तरफ़ हिजरत के लिए निकले तो उनके साथ हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी थीं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक उनकी ख़बर पहुंचने में देर हो गई। पता नहीं लग रहा था कि हिजरत की है तो कहाँ तक पहुंचे हैं, क्या हाल है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर निकल कर उनके बारे में ख़बर की प्रतीक्षा करते रहते। फिर एक औरत आई और उसने आप को उनके बारे में बताया। इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के बाद उस्मान वह पहला व्यक्ति है जिसने अपने अहल के साथ अल्लाह तआला की राह में हिजरत की है।

(मजमउज्ज़वाइद व मन्बउल फवाइद भाग 9, पृष्ठ 58 किताब मनाकिब, बाब हिजरत, हदीस नम्बर 4498,दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़अन रज़ियल्लाहु अन्हु ने हब्शा की ज़मीन की तरफ़ हिजरत का इरादा किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि रुक़य्या को भी साथ ले जाओ। मेरा ख़्याल है कि तुम में से एक अपने साथी का हौसला बढ़ाता रहेगा। अर्थात दोनों होंगे तो एक दूसरे का हौसला बढ़ाते रहोगे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया कि जाओ और इन दोनों की ख़बर लाओ कि चले गए हैं? कहाँ तक पहुंचे हैं? क्या हालात हैं बाहर के? हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा जब वापस आईं तो हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मौजूद थे। उन्होंने बताया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्ह एक ख़च्चर पर पालान डाल कर हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा को उस पर बिठा कर समुंद्र की तरफ़ निकल गए हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : हे अबूबकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद ये दोनों हिजरत करने वालों में सबसे पहले हिजरत करने वाले हैं।

(मुस्तदरिक भाग 4, पृष्ठ 414, किताब मअरफतिस्सहाबा, बाब ज़िक्र रुकय्या बिन्त रसूलुल्लाह हदीस 6999, दारुल फिक्र बैरूत 2002ई)

फिर हब्शा से उनकी वापसी का घटना भी वर्णन हुई है। पुत्र इसहाक़ कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिन सहाबा ने हब्शा की ओर हिजरत की थी उन्हें ख़बर पहुंची कि मक्का वाले इस्लाम ले आए हैं। इस पर ये मुहाजिरीन हब्शा से मक्का की तरफ़ वापस लौटे। जब वे मक्का के क़रीब पहुंचे तो उन्हें मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत थी। इस पर ये लोग पोशीदा तौर पर या किसी की अमान में आकर मक्का में दाख़िल हुए। उनमें से कुछ तो ऐसे थे कि जिन्होंने फिर मदीना हिजरत की और बदर और अहद की जंग में आपके साथ अर्थात रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए और कुछ ऐसे थे जिनको कुफ़्फ़ार ने मक्का में ही रोक लिया और वेबदर की जंग में इत्यादि शामिल नहीं हो सके। हब्शा से आकर फिर मक्का से मदीना हिजरत करने वालों में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और उनकी पत्नी हज़रत रुक़य्या पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शामिल थीं। (सीरातुल नबविय्या ले इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 265-266 दारुल क़ुतुब अल्इलिमया बेरूत 2001ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हब्शा में कुछ वर्ष रहे। किताब में एक जगह यह लिखा है कि कुछ वर्ष रहे। इसके बाद जब कुछ सहाबा कुरैश के इस्लाम की ग़लत ख़बर पा कर अपने वतन वापस आए तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु भी आ गए। यहां आकर मालूम हुआ कि यह ख़बर झूठी है। इस बिना पर कुछ सहाबा फिर हब्शा की तरफ़ लौट गए परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का में ही रहे यहां तक कि मदीना की हिजरत के सामान पैदा हो गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने समस्त सहाबा को मदीना की तरफ़ हिजरत का इरशाद फ़रमाया तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु भी अपने परिवार के साथ मदीना तशरीफ़ ले गए।

(सैरुल सहाबा भाग अव्वल (ख़ुलफ़ाए राशदीन) पृष्ठ, 178 इदारा इस्लामिया अनार कली लाहौर पाकिस्तान)

एक रिवायत में यह वर्णन मिलता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु दोबारा हब्शा की तरफ़ हिजरत कर गए थे (अल्तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद, भाग तीन, पृष्ठ 31 उस्मान बिन अफ्फान, दारुल अहया तुर्रासुल अरबी बेरूत 1996ई.)

लेकिन अधिकतर जीवनी की पुस्तकों में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हब्शा की तरफ़ इस दूसरी हिजरत का वर्णन नहीं है। वैसे भी हिजरत हब्शा द्वितीय की जो पृष्ठभूमि और विस्तार जीवनी की पुस्तकों और हदीस में वर्णन हुआ हैं, सचेत जीवनी के लेखक उस का एक-एक शब्द इस तरह स्वीकार नहीं करते क्योंकि वास्तव में ऐसा संभव नहीं है। इस लिए हिजरत हब्शा का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने जो अपनी तहक़ीक़ की है जबकि इस में से कुछ हिस्सा में पहले पिछले कुछ सहाबा के वर्णन में कर चुका हूँ लेकिन बहरहाल यहां भी वर्णन ज़रूरी है। मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब की तहक़ीक़ यह है। वह वर्णन करते हैं कि "जब मुसलमानों की तकलीफ़ चरम को पहुंच गई और क़ुरैश अपने कष्ट देने में तरक़्क़ी करते गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से फ़रमाया कि वे हब्शा की तरफ़ हिजरत कर जाएं और फ़रमाया कि हब्शा का बादशाह न्याय प्रिय और इंसाफ़ करने वाला है। उस की हुकूमत में किसी पर ज़ुलम नहीं होता। हब्शा का देश जो अंग्रेज़ी में इथोपिया या एबेसीनिया कहलाता है अफ़्रीक़ा महाद्वीप के उत्तरी पूर्व में स्थित है और रहने की दृष्टि से दक्षिण अरब के बिल्कुल मुक़ाबला पर है और मध्य में लाल सागर के अतिरिक्त कोई और देश रोक नहीं होता। उस ज़माना में हब्शा में एक मज़बूत ईसाई हुकूमत क़ायम थी और वहां का बादशाह नजाशी कहलाता था बल्कि अब तक भी वहां का हुकमरान इसी नाम से पुकारा जाता है। " अर्थात जब हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने यह लिखा।'' हब्शा के साथ अरब के तिजारती सम्बन्ध थे और उन दिनों में हब्शा की राजधानी अक्सोम (axsum) थी जो मौजूदा शहर अद्वा (adowa) के क़रीब स्थित है और अब तक एक मुक़द्दस शहर की सूरत में आबाद चला आता है। अक्सोम उन दिनों में एक बड़ी ताक़तवर हुकूमत का केंद्र था और उस वक़्त के नजाशी का

ज़ाती नाम असहमा था। जो एक न्याय करने वाला, सचेत बुद्धि वाला और मज़बूत बादशाह था। बहरहाल जब मुसलमानों की तकलीफ़ चरम को पहुंच गई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे इरशाद फ़रमाया कि जिन-जिन से सम्भव हो हब्शा की तरफ़ हिजरत कर जाएं। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमाने पर रजब के महीने में 5 नब्वी में ग्यारह मर्द और चार औरतों ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की। उनमें से अधिक प्रसिद्ध के नाम ये हैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अफ़्फ़ान और उनकी पत्नी रुक़य्या पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, ज़ुबैर पुत्र अवाम, अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा, उस्मान बिन मज़ऊन, मस्अब बिन उमैर, अबू सलमा बिन अब्दुल असद और उनकी पत्नी उम्मे सलमा।" मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब लिखते हैं कि "यह एक अजीब बात है कि उन आरम्भिक मुहाजिरीन में अधिकतर संख्या उन लोगों की थी जो क़ुरैश के ताक़तवर क़बीले से सम्बन्ध रखते थे और कमज़ोर लोग कम-नज़र आते हैं जिससे दो बातों का पता चलता है। प्रथम यह कि ताक़तवर क़बीले से सम्बन्ध रखने वाले लोग भी क़ुरैश के अत्याचारों से सुरक्षित नहीं थे। दूसरे यह कि कमज़ोर लोग जैसे ग़ुलाम इत्यादि उस वक़्त ऐसी कमज़ोरी और बेबसी की हालत में थे कि हिजरत की भी ताक़त नहीं रखते थे।

जब ये मुहाजरीन दक्षिण की तरफ़ यात्रा करते हुए शइबा पहुंचे जो इस ज़माना में अरब की एक बंदरगाह थी तो अल्लाह तआला का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि उनको एक तिजारती जहाज़ मिल गया जो हब्शा की तरफ़ रवाना होने को बिल्कुल तैयार था। इसलिए ये सब अमन से उस में सवार हो गए और जहाज़ रवाना हो गया। मक्का क़ुरैश को उनकी हिजरत का इल्म हुआ तो सख़्त निराश हुए कि यह शिकार मुफ़्त में हाथ से निकल गया। इसलिए उन्होंने इन मुहाजरीन का पीछा किया परन्तु जब उनके आदमी किनारे पर पहुंचे तो जहाज़ जा चुका था इस लिए निराश और दुखी वापस लौटे। हब्शा में पहुंच कर मुसलमानों को निहायत अमन की ज़िन्दगी नसीब हुई और ख़ुदा ख़ुदा करके क़ुरैश के अत्याचारों से छुटकारा मिला। लेकिन जैसा कि कुछ इतिहासकारों ने वर्णन किया है अभी उन मुहाजरीन को हब्शा में गए ज़्यादा समय नहीं गुज़रा था कि एक उड़ती हुई अफ़्वाह उन तक पहुंची कि समस्त क़ुरैश मुस्लमान हो गए हैं और मक्का में अब बिल्कुल शांति और अमन है। इस ख़बर का यह नतीजा हुआ कि अधिकतर मुहाजरीन बिना सोचे समझे वापस आ गए। जब ये लोग मक्का के पास पहुंचे तो मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत थी। अब उनके लिए बड़ी मुसीबत का सामना था। अंतत: कुछ तो रास्ता में से ही वापस लौट गए और कुछ छुप-छुप कर या किसी प्रभावी और ताक़तवर व्यक्ति की हिमायत में हो कर मक्का में आ गए। यह शवाल 5 नब्वी की घटना है। अर्थात हिजरत के आरंभ में और मुहाजरीन की वापसी के मध्य सिर्फ़ ढाई तीन महीने की दूरी है।

जबकि वास्तविकता यह है अफ़्वाह बिल्कुल झूठी और बे-बुनियाद थी जो हब्शा के मुहाजरीन को वापस लाने और उनको तकलीफ़ में डालने की उद्देश्य से क़ुरैश ने प्रसिद्ध कर दी होगी बल्कि ज़्यादा ग़ौर से देखा जाए तो इस अफ़्वाह और मुहाजिरीन की वापसी का क़िस्सा ही बे-बुनियाद नज़र आता है। लेकिन यदि उसे सही समझा जाए तो मुम्किन है कि इसके पीछे वह घटना हो जो कुछ हदीसों में वर्णन हुई है।" यदि इस तरह देखा जाए, यदि उसको सही माना जाए तो कुछ की जो यह रिवायत है कि हज़रत उस्मान कुछ वर्ष ठहरे वह रिवायत फिर ग़लत निकलती है और यदि उस को ग़लत समझा जाए तो फिर तीन चार महीने में वापस आ गए लेकिन बहरहाल हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब की तहक़ीक़ यह है कि यह बात ग़लत ही है। वह लिखते हैं "यदि उसे सही समझा जाए तो मुम्किन है कि इस की पीछे वह घटना हो जो कुछ हदीसों में वर्णन हुई है। और वह जैसा कि बुख़ारी में आता है यह है कि एक दफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कअबा के सहनमें सूरत नजम की आयात तिलावत फ़रमाइ। उस वक़्त वहां कई एक कुफ़्फ़ार के सरदार भी मौजूद थे और कुछ मुस्लमान भी थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूरत ख़त्म की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिज्दा किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ही समस्त मुस्लमान और काफ़िर भी सिज्दा में गिर गए।'' बहरहाल "कुफ़्फ़ार के सिज्दा के कारण हदीस में वर्णन नहीं हुई" कि वह क्यों गिर गए'' लेकिन मालूम होता है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निहायत प्रभावहीन आवाज़ में आयतों की तिलावत फ़रमाई और वह आयतें भी ऐसी थीं जिनमें विशेष रूप के साथ ख़ुदा की एकेश्वरवाद और उसकी क़ुदरत शक्ति का निहायत उत्तम रंग में नक़्शा खींचा गया था और उसके उपकार याद दिलाए गए थे और फिर एक निहायत प्रभावहीन यशस्वी शब्दों में क़ुरैश को डराया गया था कि यदि वे अपनी शरारतों से रुके न तो उनका वही हाल होगा जो उनसे पहले उन क़ौमों का हुआ जिन्होंने ख़ुदा के रसूलों को झुठलाया और फिर आख़िर में इन आयतों में हुक्म दिया गया था कि आओ और अल्लाह के सामने सिज्दा में गिर जाओ और उन आयतों की तिलावत के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सब मुस्लमान एक साथ सिज्दा में गिर गए तो इस कलाम और इस दृश्य का ऐसा जादुई प्रभाव क़ुरैश पर हुआ कि वे भी अपने आप मुसलमानों के साथ सिज्दा में गिर गए और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि ऐसे मौक़ों पर ऐसे हालात में कभी कभार इन्सान का हृदय प्रभावित हो जाता है और वह अपने आप ऐसी हरकत कर बैठता है जो वास्तव में उसके धर्म के सिद्धांतों के ख़िलाफ़ होती है।" ज़रूरी नहीं होता कि इसको मान के यह हरकत हुई हो। बे-अख़्तियारी में कई बार हरकत हो जाती है।'' कभी कबार एक सख़्त और अनचाही मुसीबत के वक़्त एक नास्तिक भी अल्लाह अल्लाह या राम-राम पुकार उठता है।" मैंने भी कुछ नास्तिकों से पूछा है और वे कहते हैं यह बिल्कुल ठीक बात है कि बावजूद इसके कि हमें ख़ुदा पर यक़ीन नहीं लेकिन कोई ऐसी ख़तरनाक हालत हो तो अपने आप मुँह से ख़ुदा का शब्द निकल आता है। तो बहरहाल'' क़ुरैश तो नास्तिक नहीं थे बल्कि बहरहाल ख़ुदा की हस्ती के मानने वाले थे। अत: जब इस प्रभावी और यशस्वी कलाम की तिलावत के बाद मुसलमानों की जमाअत एक साथ सिज्दा में गिर गई तो इस का ऐसा जादुई प्रभाव हुआ कि उनके साथ क़ुरैश भी अपने आप सिज्दा में गिर गए लेकिन ऐसा प्रभाव आम तौर पर वक़्ती होता है और इन्सान फिर शीघ्र ही अपनी असल की तरफ़ लौट जाता है। इसलिए यहां भी ऐसा ही हुआ और सजदा से उठकर क़ुरैश फिर वही बुत परस्त के बुत परस्त थे।" यह नहीं कि वह एकेश्वरवाद बन गए थे।

"बहरहाल यह एक घटना है जो सही हदीसों से साबित है। अत: यदि हब्शा के मुहाजरीन की वापसी की ख़बर दरुस्त है तो ऐसा मालूम होता है कि इस घटना के बाद क़ुरैश ने जो हब्शा के मुहाजरीन को वापस लाने के लिए व्याकुल हो रहे थे अपने इस कर्म को आड़ बना कर ख़ुद ही यह अफ़्वाह प्रसिद्ध कर दी होगी कि मक्का के क़ुरैश मुस्लमान हो गए हैं और यह कि अब मक्का में मुसलमानों के लिए बिल्कुल अमन है और जब यह अफ़्वाह हब्शा के मुहाजरीन को पहुंची तो वे स्वभाविक रूप से उसे सुनकर बहुत ख़ुश हुए और सुनते ही ख़ुशी के जोश में वापस आ गए लेकिन जब वे मक्का के पास पहुंचे तो बात की वास्तविकता से अवगत हो गए जिस पर कुछ तो छुप-छुप कर और कुछ किसी ताक़तवर और प्रभावी रईस क़ुरैश की हिफ़ाज़त में हो कर मक्का में आ गए और कुछ वापस चले गए। अत: यदि क़ुरैश के मुस्लमान हो जाने की अफ़्वाह में कोई हक़ीक़त थी तो वह सिर्फ इतनी थी जो सूरत नजम की तिलावत पर सिज्दा करने वाली घटना में वर्णन हुई है।

ख़ुदा उचित ज्ञान रखता है।

बहरहाल यदि मुहाजिरीन हब्शा वापस आए भी थे तो उनमें से अधिकतर फिर वापस चले गए और चूँकि क़ुरैश प्रतिदिन अपने कष्ट देने में तरक़्क़ी करते जाते थे और उनके अत्याचार प्रतिदिन बढ़ रहे थे। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर दूसरे मुसलमानों ने भी छुप छुप कर हिजरत की तैयारी शुरू कर दी और अवसर पाकर आहिस्ता-आहिस्ता निकलते गए। यह हिजरत का सिल्सिला ऐसा शुरू हुआ कि अंतत: उन मुहाजिरीन हब्शा की संख्या एक सौ एक तक पहुंच गई जिनमें अठारह औरतें भी थीं और मक्का में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बहुत ही थोड़े मुस्लमान रह गए। इस हिजरत को कुछ इतिहासकार हिजरत हब्शा सानिया के नाम से पुकारते हैं।"

फिर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु अपना एक विश्लेषण वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "एक और बात है जो इस अफ़्वाह और मुहाजरीन की वापसी के क़िस्सा को शुरू से ही संदिग्ध कर देती है और वह यह कि तारीख़ में हिजरत हब्शा के आरम्भ की तारीख़ रजब 5 नब्वी और सिज्दा की तारीख़ रमज़ान 5 नब्वी वर्णन हुई है और फिर तारीख़ में ही यह बात भी वर्णन हुई है कि इस अफ़्वाह के नतीजा में मुहाजरीने हब्शा की वापसी शवाल 5 नब्वी में हुई थी। मानो हिजरत के आरंभ में और मुहाजरीन की वापसी के ज़मानों में केवल दो से लेकर तीन महीने की दूरी थी और यदि सिज्दा की तारीख़ से ज़माना की गिनती करें तो यह समय केवल एक ही महीने का बनता है। अब उस ज़माना के हालात के दृष्टि में यह पूर्णता असंभव है कि मक्का और हब्शा के मध्य इस थोड़े समय में तीन यात्राएँ पूर्ण हो सकीं हूँ। अर्थात सबसे पहले मुस्लमान मक्का से हब्शा पहुंचे। इसके बाद कोई व्यक्ति क़ुरैश के इस्लाम की ख़बर लेकर मक्का से हब्शा गया और फिर मुस्लमान हब्शा से रवाना हो कर मक्का में वापस आए। इन तीन यात्राओं की पूर्णता बजाय उस समय के जो अधिक कर्यों में लगते हों लग जाता है" तैयारी भी होती है और चीज़ें हैं'' इस थोड़े समय में पूर्णता असंभव थी और इस से भी अधिक यह बात असंभव थी कि सिज्दा के ज़माना से लेकर हब्शा के मुहाजरीन की कथित वापसी तक दो यात्राएँ मुकम्मल हो सकी हों क्योंकि इस ज़माना में मक्का से हब्शा जाने के लिए पहले दक्षिण में आना पड़ता था और फिर वहां से कश्ती लेकर जो हर समय उपलब्ध नहीं होती थी अहमर का समुद्र पार करके अफ़्रीक़ा के तट तक जाना होता था और फिर तट से लेकर हब्शा की राजधानी अक्सोम तक जो तट से काफ़ी दूरी पर है पहुंचना पड़ता था और उस ज़माना की धीमी यात्राओं की दृष्टि में इस किस्म की एक यात्रा भी डेढ़ दो माह से कम समय में हरगिज़ सम्पूर्ण नहीं हो सकती थी। इस प्रकार से मानों यह क़िस्सा सिरे से ही ग़लत और बे-बुनियाद क़रार पाता है लेकिन यदि मानों इस में कोई वास्तविकता थी भी तो वह निसन्देह इससे अधिक नहीं थी जो ऊपर वर्णन की गई है। ख़ुदा उचित ज्ञान रखता है (सीरत ख़तमनन्बियीन, पृष्ठ 146 से 152)

बहरहाल उसके कारण जो भी थीं कुछ समय के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हब्शा से वापसी हो गई और फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की मदीना की तरफ़ हिजरत और भाइचारा का वर्णन इस तरह मिलता है कि मुहम्मद बिन जाफ़िर बिन ज़ुबैर से रिवायत है कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का से मदीना की तरफ़ हिजरत फ़रमाई तो आप क़बीला बनू नज्जार में हज़रत हसन बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई

हज़रत औस बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के घर ठहरे।

मूसा बिन मुहम्मद अपने माता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य भाइचारा क़ायम फ़रमाया था। एक रिवायत के अनुसार हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु की माता हज़रत ओस बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाया गया था और यह भी कहा जाता है कि हज़रत अबू उबदाह साअद बिन उस्मान ज़ुरक़ी से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का भाईचारा क़ायम हुआ था। (अत्तब्कातुल कुबरा ले इब्ने सअद, भाग तीन, पृष्ठ 31 उस्मान बिन अफ्फान,दारे अहया अत्तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई)

एक रिवायत के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के भाईचारा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने साथ क़ायम फ़रमाया था। इसलिए तब्कातुल कुब्रा में लिखा है कि इब्ने लबीबा वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उस्मान बिन अफ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु कैद किए गए अर्थात जब दुश्मनों ने आपको कैद कर दिया, हर तरह की पाबन्दी लगा दी तो आख़िरी दिनों में आपने एक ऊंची कोठड़ी के रोशन दान से झांक कर लोगों से पूछा क्या तुम में तल्हा है? उन्होंने कहा जी हाँ है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ, अल्लाह तआला का कहा कि क्या आपको ज्ञान है नाँ कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन और अंसार के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया था तो उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने साथ मेरा भाईचारा क़ायम फ़रमाया था। अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने साथ भाईचारे में रखा था। इस पर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि ख़ुदा की कसम यह सही है। इस पर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर को घेरे हुए जो इर्दगिर्द विरोधी थे उन्होंने उनसे पूछा, जवाब मांगा की कि तुमने यह क्या किया? तो हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़े साहस से उत्तर दिया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्ह ने मुझ से कसम लेकर पूछा था और जिस बात के बारे में पूछा था वह मेरी आँखों के सामने हुई थी तो क्या मैं उस की गवाही न देता?

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 38 ज़िक्र मा कीला ले उस्मान फिल ख़ला, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बैरूत,1996 ई)

मैं तो झूठ नहीं बोल सकता था। जो तुमने विरोध करना है कर लो।

हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की घटना का वर्णन इस तरह मिलता है कि अब्दुल्लाह बिन मुकनिफ बिन हरिस अन्सारी वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर के युद्ध के लिए रवाना हुए तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी बेटी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा के पास छोड़ा। वह बीमार थीं और उन्होंने उस दिन वफ़ात पाई जिस दिन हज़रत ज़ैद बिन हारिस: रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना की तरफ़ उस फ़तह की ख़ुशख़बरी लेकर आए जो बदर में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए बदर के माले ग़नीमत में हिस्सा निर्धारित फ़रमाया और आपका हिस्सा बदर की जंग में शामिल होने वालों के बराबर था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ अपनी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम की शादी कर दी।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 32 उस्मान बिन अफ्फान, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बैरूत,1996 ई)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से मस्जिद के दरवाज़े पर मिले और फ़रमाने लगे कि उस्मान यह जिब्राईल हैं उन्होंने मुझे ख़बर दी है कि अल्लाह तआला ने उम्मे कुलसूम का निकाह रुकय्या जितने हक़ महर पर और उससे तुम्हारे अच्छे व्यवहार पर तुम्हारे साथ कर दिया है।

(सुनन इब्ने माजा, इफ्तताह अल्किताब फज़ल उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो, हदीस नम्बर 110)

अर्थात दूसरी बेटी का निकाह भी अल्लाह तआला ने कहा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दिया जाए।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मे कुलसूम की शादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से की तो आपने हज़रत उम्मे यमन रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया मेरी बेटी उम्मे कुलसूम को तैयार करके उस्मान के पास छोड़ आओ और उसके सामने ढोल बजाओ। इसलिए उन्होंने ऐसा ही किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीन दिन के बाद हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया। हे मेरी बेटी! तुमने अपने पति को कैसा पाया? उम्मे कुलसूम ने निवेदन किया वह बेहतरीन पति हैं।

(सीरत अमीरुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ्फान शखसियतहो व असरहू लेखक अला मुहम्मद अस्सलाती पृष्ठ 41, अल्मबहस 3, मुलाज़मत लिल्नबिय्या फिल मदीनत, वफात उम्मे कुलसूम, दारुल मअरफत बैरूत, 2006 ई)

हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाँ 9 हिज्री तक रहीं उसके बाद वे बीमार हो कर वफ़ात पा गईं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और उनकी क़ब्र के पास बैठे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र के पास इस हाल में बैठे हुए देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखें आंसुओं से भरी थीं।

(सीरत अमीरुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ्फान शखसियतहो व असरहू लेखक अला मुहम्मद अस्सलाती पृष्ठ 42, अल्मबहस 3, मुलाज़मत लिल्नबिय्या फिल मदीनत, वफात उम्मे कुलसूम, दारुल मअरफत बैरूत, 2006 ई)

बुख़ारी की एक रिवायत में इस घटना का इस प्रकार वर्णन हुआ है कि हिलाल ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की। वह कहते थे कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी के जनाज़े पर मौजूद थे। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ब्र के पास बैठे हुए थे तो मैंने देखा कि आपकी आँखें आँसू बहा रही थीं।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल जनायज़, बाब मन युदखलु फिल कब्र अल्मराअत, हदीस नम्बर 1342, उर्दू अनुवाद सहीह अल्बुख़ारी भाग 2 पृष्ठ 663, प्रकाशन नज़ारत इशाअत रव्बा)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात पर फ़रमाया यदि मेरी कोई तीसरी बेटी होती तो में उस की शादी भी उस्मान से करवा देता।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 32 उस्मान बिन अफ्फान, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बैरूत,1996 ई)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जगह से गुज़रे तो देखा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु वहां बैठे थे और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के दुख में रो रहे थे। रिवायत करने वाले कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आपके दोनों साथी अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हू और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हू भी थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा उस्मान! तुम किस वजह से रो रहे हो? हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं इस वजह से रो रहा हूँ कि मेरा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दामादी का सम्बन्ध ख़त्म हो गया है। दोनों बेटियां फ़ौत हो गईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मत रो। कसम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है कि यदि मेरी सौ बेटियां होतीं और एक-एक कर के फ़ौत हो जातीं तो मैं हर एक के बाद दूसरी को तुझ से ब्याह देता यहां तक कि सौ में से एक भी बाक़ी न रहती।

(कन्ज़ुल उम्माल भाग 13, पृष्ठ 21 किताबुल फज़ाइल फज़ाइलुस्सहाबा, फज़ाइल ज़ुन्नूरैन उस्मान बिन अफ्फान हदीस नम्बर 36201, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2004 ई)

बहरहाल यह एक मुहब्बत का इज़हार था जो दोनों तरफ़ से हुआ। एक फ़िक्र थी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की। इस रिश्ता का जो सम्बन्ध था वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ायम रखा और यह विश्वास दिलाया कि यह सम्बन्ध तो क़ायम है। बाक़ी वर्णन इंशा अल्लाह आइन्दा होगा।

जैसा कि मैं हर जुम्आ में तहरीक कर रहा हूँ। दुआओं की तरफ़ तवज्जा दिला रहा हूँ कि पाकिस्तान के लोगों के लिए अहमदियों के लिए दुआएं करते रहें। विरोधी तो अपनी तरफ़ से अपनी सीमा में दायरा तंग कर रहे हैं लेकिन उनको नहीं पता कि एक बड़ी हस्ती भी है, ख़ुदा तआला भी है जिसकी तक़दीर भी चल रही है और उस का दायरा भी उनके ऊपर तंग हो रहा है और वह दायरा जब तंग होता है तो फिर इससे कोई भाग नहीं सकता। अल्लाह तआला उन लोगों को अक़्ल दे और ये लोग अभी भी अक़्ल से काम लें, इन्साफ़ से काम लें और बिना वजह के अत्याचार और ज़ुल्मों से रुक जाएँ। इसी तरह अल्-जज़ायर के लोगों के लिए भी दुआ करें। उनका ईमान सलामत रहे। इसी तरह कुछ और जगहों पर भी अहमदियों का बहुत विरोध हो रहा है। अल्लाह तआला हर जगह हर अहमदी को हर प्रकार से सुरक्षित रखे।

नमाज़ों के बाद मैं कुछ जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। उनका वर्णन भी यहां कर देता हूँ। पहला वर्णन आदरणीय मौलाना सुलतान महमूद अनवर साहब का है। पूर्व नाज़िर इस्लाह इरशाद मर्कज़िया और नाज़िर ख़िदमत दरवेशां भी थे और नाज़िर इस्लाह इरशाद रिश्ता नाता रहे। 11 जनवरी को रब्वाह में लगभग 88 वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन। उनकी पिता का नाम चौधरी मुहम्मद दीन था और माता का नाम रहमत बी-बी था। उनके पिता ने 1928ई. में हज़रत ख़लीफ़ा सनी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की थी और अहमदियत में दाख़िल हुए थे। हज़रत

मौलाना सुलतान महमूद अनवर साहब आपके इकलौते बेटे थे। मौलाना सुलतान महमूद अनवर साहब ने मिडल तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वक़्फ़ कर के अप्रैल 1946 ई. में मदरस्सा अहमदिया क़ादियान में दाख़िला ले लिया। पाकिस्तान बनने के बाद अहमद नगर में जामिआ अहमदिया में चले गए जहां से 1952ई. में मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा दी और अप्रैल 1956ई. में जामिआ अहमदिया से शाहिद की डिग्री प्राप्त की। उनकी शादी वहीं महमूदा शौकत साहिबा पुत्री चौधरी साअदुद्दीन साहब से हुई। उनका निकाह मौलाना जलालदुद्दीन साहब शम्स ने 1960 ई. में जलसा सालाना के अवसर पर पढ़ाया। उनकी औलाद में चार बेटे और दो बेटियां हैं। एक बेटे उनके हस्सान महमूद वाक़िफ़े ज़िन्दगी हैं। रब्वाह में तहरीक जदीद के दफ़ातरों में सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। आदरणीय मौलाना साहब की पहली तक़र्रुरी गुजरात में हुई थी। तथा आपने बतौर मुरब्बी सिल्सिला पाकिस्तान के विभिन्न शहरों में ख़िदमतें की। 1974 ई. से 1978 ई. तक यह घाना में भी रहे। उस दौर में जब मैं भी वहां था यह वहां थे और मैंने देखा है कि बड़े बेनफ़्स हो के उन्होंने वहां सेवा की। 1982 ई. से 1983 ई. तक यह सैक्रेटरी मज्लिस कारपर्दाज़ भी रहे। फिर 83 ई. में सदर मज्लिस कारपर्दाज़ निर्धारित हुए। 1983 ई. से 98 ई. तक यह नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया रहे। फिर उसके बाद 2011ई. तक नाज़िर ख़िदमत दरवेशां रहे। फिर 2011 ई. से 17 ई. तक नाज़िर रिश्ता नाता रहे और बीमारी के कारण से 2017 ई. में रिटायर्ड हो गए थे। उनको तब्लीग़ करने की प्रतिभा, लोगों से बातचीत करने की प्रतिभा, भाषण की प्रतिभा भी बहुत थी। उनकी कई ऐसे घटनाएं हैं कि विभिन्न मतों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों से और उल्मा से उनकी विरोधी मस्ल ोंपर बात चीत होती और बड़े ठोस और इल्मी उत्तर देते। बड़े अच्छे प्रवक्ता थे जैसा कि मैंने कहा। श्रोताओं को, सुनने वालों को अपनी तरफ़ खींच लेते थे। मुरब्बियान जो उनके साथ काम करने वाले हैं वे भी यही लिखते हैं कि हमें साथ लेकर चलने वाले थे। हर एक ने यही लिखा कि बहुत अधिक शफ़क़त का सुलूक हम से फ़रमाते थे और ख़ुद भी तहज्जुद और इबादत करने वाले और लोगों को, मुरब्बियान को भी विशेषता पर तहज्जुद और इबादत की नसीहत किया करते थे। उनका ख़िलाफ़त से वफ़ादारी और इताअत का एक ग़ैरमामूली स्तर था। ख़िलाफ़त राबिया में ज़रा सा इब्तेला भी इन पर आई लेकिन पूर्ण इताअत के साथ उन्होंने वह दौर गुज़ारा और अधीन रह कर भी काम किया बल्कि उनको किसी ने कहा भी कि आप पहले नाज़िर थे अब आपको नाज़िर की बजाय किसी नाज़िर के अधीन काम करना पड़ रहा है तो मुझे मुरब्बियान ने भी लिखा है और उनकी एक बेटी ने भी लिखा था कि उन्होंने कहा कि वक़्त ख़लीफ़ा ज़्यादा बेहतर जानते हैं कि किस की कहाँ क्या ज़रूरत है। मैंने वक़्फ़ किया हुआ है मुझे चाहे झाड़ू देने पर लगा दिया जाए मैं तो वही काम करूँगा जिसका वक़्त ख़लीफ़ा का इरशाद है और अल्लाह तआला ने फिर बेहतर हालात किए और उनकी इस कामिल वफ़ा और इताअत के नमूने को मैं समझता हूँ क़बूलीयत का रंग मिला और फिर दोबारा सदर अंजुमन अहमदिया के मैंबर भी बने और नाज़िर भी बने। जहां भी रहे, कराची में भी और दूसरी जगहों पर भी तो अमीर के साथ उनका पूर्ण सहयोग और इताअत का नमूना होता था। अल्लाह तआला उन से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आपने कुछ इल्मी काम भी किए हुए हैं, पुस्तकें लिखी हैं। उनकी एक रचना "कलिमा तय्यबा की अज़मत का क़ियाम अहमदी की पहचान है'' उनकी दूसरी किताब है "अल्लाह तआला, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, क़ुरआन करीम और ख़ाना काअबा।" फिर उनकी एक किताब है "जमाअत अहमदिया की संख्या का मसला।" फिर एक किताब है "निफ़ाज़े शरीयत में नाकामी के अस्बाब" फिर उनकी एक किताब है "तौहीन रसालत की सज़ा।" बहरहाल ये उनकी रचनाएँ हैं। इल्मी काम भी उन्होंने किए जैसा कि मैंने कहा बहुत ठोस काम करने वाले थे। अल्लाह तआला उन से रहम और क्षमा का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा मौलाना मुहम्मद उमर साहब पूर्व नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया क़ादियान का है जो पी.के. इब्राहीम साहब के बेटे थे। 12 जनवरी को 87 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन। मरहूम का सम्बन्ध केरला से था। उनके पिता इब्राहीम कुटी साहब थे जो जमाअत के सख़्त विरोधियों में से थे। मौलाना साहब के जन्म से दस वर्ष पहले उनके पिता व्यापर के सिल्सिला में बंबई गए। उन दिनों बंबई में काफ़ी अहमदी व्यापर करते थे। बंबई में मालाबार के ही कुछ अहमदियों से उनकी मुलाक़ात हुई और अहमदिया अकीदों के बारे में विचार विमर्श हुआ और 1924 ई. में जब हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु बंबई तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त हुज़ूर के मुबारक हाथ पर उन को बैअत कर के सिल्सिला में दाख़िल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद उनको क़ादियान में भी आने की तौफ़ीक़ मिली।

मौलाना उमर साहब 1954 ई. में क़ादियान आए जबकि देश के विभाजन के बाद मदरस्सा अहमदिया का पुन: शुरू से आरंभ हो चुका था। 1955 ई. में मदरस्सा में दाख़िल हुए और 1961 ई. में मदरस्सा अहमदिया और पंजाब यूनीवर्सिटी से मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास करने के बाद एक वर्ष तक मदरस्सा में पढ़ाते रहे। शिक्षा ग्रहण करने के ज़माना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहब का क़ादियानी की इच्छा पर मरहूम को लगभग एक वर्ष तक रोज़ाना सुबह उनके घर क़ुरआन करीम सुनाने की तौफ़ीक़ मिली। 1962 ई. से मैदान तब्लीग़ में सेवा का सिल्सिला शुरू किया। हिदुस्तान के बड़े बड़े शहरों में काम किया और बड़े कामयाब मुबल्लिग़ के तौर पर ख़िदमत करते रहे। तब्लीग़ी जलसों में उनकी तक़रीर होती थीं। मुनाज़रा यादगीर में शामिल हुए और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमाहुल्लाह की विशेष रहनुमाई में कोयम्बटूर के तारीख़ी मुनाज़रा में जो कि निरंतर नौ दिन तक जारी रहा और जिसमें विशेषता पर मौलाना दोस्त मुहम्मद साहब शाहिद और हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र साहब भी मर्कज़ से प्रतिनिधि गए हुए थे उनके साथ उन्होंने बहुत अहम काम किया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने एक जगह उनके काम को सराहते हुए अपने ख़ुत्बा में फ़रमाया था कि कुछ जमाअतें हैं जहां एक ही आदमी है जो फ़ौरी तौर पर अकेला सारा बोझ उठाता है और अनुवाद करके अर्थात ख़ुत्बों का अनुवाद कर के फ़ौरी तौर पर फिर अधिकता से प्रकाशित करता है और ऐसी जमाअतों का ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से मयार तरक़्क़ी पर है क्योंकि उनको फ़ौरी ख़लीफ़ा का ख़ुत्बा मिल जाता है और इससे सारी जमाअत को पता लग जाता है कि क्या हो रहा है। साऊथ इंडिया में हमारी ऐसी जमाअतें जो उर्दू नहीं समझतीं वहां हमारे मौलवी मुहम्मद उमर साहब मुब्ल्लिग़ सिल्सिला हैं। उनको ख़ुदा तआला ने इस बात का जुनून दिया हुआ है। उधर आवाज़ कान तक पहुंची इधर फ़ौरी तौर पर उसके अनुवाद किए और फ़ौरी तौर पर सारी जमाअतों तक पहुंचा दिया। तो बड़ी मेहनत से यह काम किया करते थे। लगभग एक वर्ष तक फ़लस्तीन में भी उनको सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। क़ुरआन करीम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कई पुस्तकों और पत्रिकाओं के मलयालम और तमिल में अनुवाद करने की तौफ़ीक़ पाई। 2007 ई. में जब उनको मैंने नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया निर्धारित किया और फिर ऐडीशनल नाज़िर इस्लाहो इरशाद तालीमुल क़ुरआन और वक़्फ़ आरिज़ी निर्धारित किया और फिर बतौर नायब नाज़िर आला भी सेवा की तौफ़ीक़ मिली तो बड़े उत्तम तरीके से उन्होंने समस्त ख़िदमें सरअंजाम दीं। मदरस्सा अहमदिया से फ़ारिग़ होने के बाद मजमूई तौर पर मरहूम को 53 वर्ष तक सिल्सिला की सेवा की तौफ़ीक़ मिली। आपके पीछे रहने वालों में चार बेटियां हैं और दामाद और नवासे नवासियाँ और पड़ नवासे नवासियाँ भी हैं। जुनून था उनको जमाअत की सेवा का। जब फ़ैमिली के साथ ज़ाती यात्रा पर जाया करते थे तो यात्रा के दौरान भी और जमाअती कामों और विशेष रूप से अनुवाद इत्यादि के कामों में व्यस्त रहते थे।

श्रीलंका के नैशनल सदर साहब लिखते हैं कि श्रीलंका जमाअत की अहमदियत की तारीख़ में वह सुनहरी दौर हमेशा सुरक्षित रहेगा जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की बरकतों वाली क़ियादत में मौलाना साहब की पहली बार मर्कज़ी मुबल्लिग़ के तौर आना पर अल्लाह तआला के फ़ज़ल के साथा 1978 ई. में हुआ था तो ग़ैरमामूली तौर पर जमाअत के अंदर नए रुहानी जोश के साथ इस्लाह और पवित्र तबदीली नज़र आने लगी और मौलाना मरहूम की वहां अत्यधिक सेवाएं की हैं। 1994 ई. में कोलंबो शहर में राम कृष्णा के बड़े हाल में मौलाना साहब की अमन और एकेश्वरवाद के विषय पर एक ऐसी ज़बरदस्त तक़रीर हुई जिसको सुनने के लिए चार सौ से ज़्यादा लोग शामिल हुए। राम कृष्णा तहरीक के अन्य देश के सदर और देश के हिंदू कल्चरल मिनिस्टर ऑनरेबल देवराज (Deueraj) विशेषता मौलाना मरहूम की यह तक़रीर सुनकर वज्द में आ गए और बहुत तारीफ़ करने लगे क्योंकि इस तक़रीर में मौलाना साहब ने गीता के हवालों से मंत्र पढ़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई को साबित किया था। इसीलिए उनकी वह तारीख़ी तक़रीर आज भी उन लोगों में प्रसिद्ध है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चार पुस्तकों को तमिल भाषा में अनुवाद किया और विभिन्न विषयों के तहत सात पुस्तकें तमिल भाषा में ख़ुद लिखीं। तामिलनाडू राज्य में जमाअत की पत्रिका समदाना वाज़ही (samadana vazhi) का आरंभ क के एक लम्बा समय तक वहां से और दूसरे राज्यों से भी प्रकाशित करते रहे। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी कामिल वफ़ा के साथ जमाअत से सम्बन्ध रखने की तौफ़ीक़ दे।

अगला जनाज़ा आदरणीय हबीब अहमद साहब मुरब्बी सिल्सिला का है जो मुहम्मद इस्माईल साहब फ़ैक्ट्री एरिया रब्वाह के बेटे थे। 25 दिसंबर को इस्लामाबाद में हार्ट-अटैक से 64 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। 1979 ई. में उन्होंने जामिआ पास किया था। इसके बाद पाकिस्तान के विभिन्न राज्यों में उनको काम की तौफ़ीक़ मिली। 1989 ई. से 2003 ई. तक नाईजीरिया में सेवा की तौफ़ीक़ पाई। इस दौरान सितम्बर 1998 ई. से अक्तूबर 2000 ई. तक अमीर और मिशनरी इंचार्ज नाईजीरिया भी रहे। सादगी और विनम्रता के साथ सेवा करते रहे। दफ़्तरी उमूर के इलावा मुहल्ला के तर्बीयती उमूर में भी बड़े अहसन रंग में काम करते थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा तीन बेटियां और दो बेटे शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी वफ़ा से जमाअत से सम्बन्ध क़ायम रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय बदरुज़मान साहब का है जो कुछ समय से कर्मचारी वकालत माल यू.के. थे। 3 जनवरी को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन।

निहायत मुख़लिस और मेहनती कर्मचारी थे। 1944 ई. में अमृतसर में पैदा हुए। पैदाइशी अहमदी थे। उनको ख़ुद्दामुल अहमदिया में भी जब गर्वनमैंट में अपनी सर्विस कर रहे थे तो क़ायद ज़िला कोयटा के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ मिली। फिर अन्सारुल्लाह ब्लोचिस्तान के नाज़िम भी रहे। इन पर 1986 ई में एक जमाअत का केस भी हुआ जिसके अधीन यह कैद में भी रखा और 1995 ई. से 99 ई. तक वकालत माल प्रथम रब्वाह में भी ख़िदमत सरअंजाम दी। यहां लंदन आ गए तो रकीम प्रैस में और फिर सतरह वर्ष ऐडीशनल वकालत माल लंदन में उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय मंसूर अहमद तासीर साहब का है जो मौलवी मुहम्मद अहमद नईम साहब मुरब्बी सिल्सिला के बेटे थे और शोबा एहतिसाब नज़ारत उमूर आमा रब्वाह में कर्मचारी थे। यहां लंदन अपने बेटे के पास आए हुए थे 30 दिसम्बर को 70 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। आपने ज़िन्दगी के लगभग पच्चीस वर्ष ख़िदमत धर्म के लिए जमाअत के कर्मचारी की हैसियत से विभिन्न विभागों में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। निहायत दर्जा के मिलनसार धार्मिक और शफ़ीक़ इन्सान थे। ख़िलाफ़त के साथ अत्यधिक मुहब्बत करने वाले थे। दूसरों को भी इसकी नसीहत करते रहते थे। सब्र और भाईचारे से मामलों को हल करते थे। साधारणता जो पेचीदा मामले होते थे वह आपके सपुर्द किए जाते थे और कभी कभी दोनों पक्ष वाले ग़ुस्सा और जोश की भावनाओं से मग़लूब हो कर दफ़्तर आते थे लेकिन आप मुहब्बत और प्यार से उनकी भावनाओं और ग़ुस्सा को कंट्रोल कर लेते थे और मामला हल कर दिया करते थे। जमाअत की सेवा का इस क़दर जज़बा था कि उनकी पत्नी ने लिखा है कि आपकी बेटी डाक्टर फ़ारिआ मन्सूर की जब वलीमा की दावत थी तो इस दिन यह सुबह सुबह तैयार हो के दफ़्तर के लिए निकलने लगे। पत्नी ने कहा कि शादी वाला घर है आज तो छुट्टी कर लें। उन्होंने उत्तर दिया कि दावत का वक़्त 2 बजे है। वक़्त नष्ट करने की क्या ज़रूरत है? मैं इस वक़्त दफ़्तर जा रहा हूँ उस वक़्त आ जाऊँगा। अपने से बड़े आफ़िसरान के साथ इज़्ज़त एहतिराम से पेश आते। यदि किसी ममलों में राय का मतभेद होता तो अदब के तक़ाज़ों को ध्यान में रखते और हमेशा अपनी राय पेश करते। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी रख़्शंदा साहिबा दो बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए।

बचपन से मैं उनको जानता हूँ। मेरे साथ यह पढ़ा करते थे। हमेशा से उनको मैंने देखा है कि बड़ी शराफ़त थी और हँसना और मज़ाक़ करने वाली तबीयत थी। कभी ग़ुस्सा नहीं आना। कभी लड़ाई नहीं करनी और वही बात फिर उनमें आख़िर तक रही जिसके कारण से फिर यह लोगों में सुलह सफाई कराने में भी प्रमुख भूमिका अदा करते रहे।

अगला जनाज़ा डाक्टर उबेदी इब्राहीम मुआग़ा साहब तंज़ानिया का है जो 9 दिसम्बर को तहत्तर वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। मैडीकल के विबाग में मकरेरा (Makerere) यूनीवर्सिटी योगंडा में दाख़िला प्राप्त किया और अल्लाह के फ़ज़ल से ईस्ट अफ़्रीक़ा के पहले लोकल अहमदी डाक्टर होने का सम्मान भी प्राप्त किया। डाक्टर साहब ने अपनी जवानी में ही बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया। स्कूल के ज़माना से ही मज़हबी मामलों के प्रोग्रामों में शामिल होते थे। तथाकथित इस्लामी स्कॉलरज़ की तरफ़ से जमाअत अहमदिया पर बेपनाह आरोपों के कारण से उनके दिल में जमाअत के बारे में जानने का शौक़ पैदा हुआ। उसी ज़माने में उनकी मुलाक़ात मुबल्लिग़ सिल्सिला शेख़ अबू तालिब सांदी साहब से हुई जो उनके रिश्तेदार भी थे। जब उनसे उन आरोपों के बारे में बातचीत हुई तो शैख़ साहिब ने तफ़सीली तौर पर न सिर्फ उन मन-घड़त आरोपों के उत्तर से आगाह किया बल्कि उन्हें जमाअत अहमदिया की तरफ़ से प्रकाशित किए गए सवाहेली क़ुरआन का अनुवाद और अन्य पुस्तकों को भी दिखाई। इन पुस्तकों का अध्ययन करने के बाद डाक्टर साहब ने बैअत कर ली। अल्लाह के फ़ज़ल से उन्होंने अपने बैअत के वादे को आख़िरी दम तक निभाया। हर वक़त हर स्तर के लोगों को इस्लाम और अहमदियत का संदेश पहुंचाने में लगे रहते। तब्लीग़ के लिए उनके दिल में एक जोश था जिसके कारण से अहमदियों और ग़ैर अहमदियों में विशेषता जाने जाते थे। अधिकतर अपने बैग में जमाअती पुस्तकों और पत्रिकाएं उठा कर बाज़ार ले जाते और बेचा करते थे। आप को लोगों ने पूछा कि डाक्टर हैं और यहां किताबें बेच रहे हैं? तो बड़े ख़ुशगवार लहजे में उत्तर दिया करते थे कि जब मैं हस्पताल में होता हूँ तो जिस्म का ईलाज करता हूँ जबकि इस वक़्त में रूह का ईलाज कर रहा हूँ। इन दोनों चीज़ों को न अलग किया जा सकता है और न ही उनमें से किसी एक को अनदेखा करना चाहिए। ख़िलाफ़त से बेपनाह मुहब्बत और अक़ीदत का सम्बन्ध था। बच्चों की इस्लामी तरीक़ा पर परवरिश की। शिक्षा और तरबीयत की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया। तथा घर पर बच्चों के साथ नमाज़ बाजमाअत का एहतिमाम भी करते थे। घर पर एक लाइब्रेरी भी बनाई हुई थी जिसमें अन्य उलूम की पुस्तकों के साथ साथ जमाअत की पुस्तकें भी रखी हुआ था। अपनी औलाद के अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम पर क़ायम रहने के बारे में ख़ुद भी दुआ करते और दूसरों को भी कहते रहते थे। जमाअत के साथ जड़े हुए थे। उनके समस्त बच्चे भी जमाअत के निज़ाम के साथ जड़े हुए हैं और अपने पिता की तरह नेक तबीयत रखने वाले हैं। अल्लाह तआला उनको हमेशा जोड़े रखे और पिता की दुआएं और नेक इच्छाओं को पूरी करने वाले हों। अल्लाह तआला डाक्टर साहब से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और दर्जात बुलन्द करे।

अगला वर्णन सुग़रा बेग़म साहिबा का है जो दीन मोहम्मद साहब नंगली दरवेश क़ादियान की पत्नी हैं। 6 जनवरी को 85 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत हकीम मुहम्मद रमज़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी थीं। नमाज़ कुर्आन की पाबन्द, बाक़ायदगी से नमाज़ तहज्जुद अदा करने वाली, मेहमान नवाज़, साबिर और शुक्र करने वाली, मेहनती, हमदर्द और बहुत सी ख़ूबियों की मालिक एक नेक औरत थीं। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत का सम्बन्ध था। कई वर्ष तक लज्ना इमा उल्लाह में बतौर सैक्रेटरी ख़िदमत ख़लक़ ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में दो बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। उनके एक बेटे बशीरुद्दीन साहब को चालीस वर्ष तक ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। दूसरे बेटे मुनीरुद्दीन इस वक़्त निज़ामत तामीरात में क़ादियान में ख़िदमत कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अगला वर्णन आदरणीय चौधरी करामतुल्लाह साहब का है जो 26 दिसम्बर को 95 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत चौधरी शाह दीन साहब आफ़ घटयालियाँ के पोते थे जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्यालकोट आने पर बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया था। मरहूम शरीफ़ नफ़्स बेलौस मुहब्बत करने वाले, गरीबों का ख्याल रखने वाले और ज़रूरतमंदों का ख़्याल रखने वाले, हर हाल में ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करने वाले एक मुख़्लिस इन्सान थे।

उनके बेटे सुहैल साहब लिखते हैं कि मेहमान नवाज़ी की विशेषता उनमें विशेष था और इस का इज़्हार ख़ुसूसी तौर पर उस वक़्त होता था जब वाकफ़ीने ज़िन्दगी जमाअत के दौरों के सिल्सिला में बदीने सिंध तशरीफ़ लाया करते थे। इन को फुर्क़ान फ़ोर्स में भी सेवा की तौफ़ीक़ मिली। 1983 ई. से लेकर 2018 ई. तक अल-फ़ज़ल इंटरनैश्नल के दफ़्तर में रज़ाकाराना सेवा करते रहे। अपने घर को शुरू से ही जमाअत के फंक्शनज़ के लिए पेश किया हुआ था और मौजूदा घर में भी एक हिस्सा नमाज़ सैंटर के तौर पर तामीर करवाया। आपकी बेटियां भी सेवा कर रही हैं और बेटा है वह भी जमाअत की सेवा सरअंजाम दे रहा है। उनके नवासों में से एक नवासा फ़र्हाद अहमद मुरब्बी सिल्सिला यहीं यू.के. में प्रैस ऐंड मीडिया में भी है। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को, उनकी नस्ल को उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा चौधरी मुनव्वर अहमद ख़ालिद साहब जर्मनी का है जो 20 अगस्त को 85 साल की उम्र में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन। मरहूम का निज़ाम जमाअत के साथ गहरा सम्बन्ध था। तब्लीग़ी और तर्बीयती कार्यों में भरपूर हिस्सा लेते थे और जर्मनी में विभिन्न वक़्तों में बतौर सदर और जनरल सैक्रेटरी सेवा की तौफ़ीक़ पाई। अन्सारुल्लाह की भी विभिन्न उहदों में सेवा की तौफ़ीक़ पाई। इसके इलावा जब यह पाकिस्तान में थे तो वहां तहरीक जदीद की ज़मीनों पर मैनेजर के रूप में भी इनको काम करने की तौफ़ीक़ मिली। ख़िलाफ़त से गहरा इख़लास का सम्बन्ध था। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा पाँच बेटे और छ: बेटियां शामिल हैं।

अगला वर्णन नसीरा बेग़म साहिबा पत्नी अहमद सादिक़ ताहिर महमूद रिटायर्ड मुरब्बी सिल्सिला बंग्ला देश का है जो सत्ताईस अट्ठाईस नवम्बर के मध्य अर्थात रात को वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन। मरहूमा आदरणीय मौलवी मुहम्मद साहब पूर्व नैशनल अमीर की बेटी थीं। मरहूमा नमाज़ कुर्आन की पाबन्द, दुआ करने वाली, मेहमान नवाज़, सब्र करने वाली एक नेक महिला थीं। रमज़ान में बाक़ायदगी के साथ क़ुरआन करीम की तिलावत किया करती थीं और ख़त्म करती थीं। इसके इलावा और बहुत सारी ख़ूबियों और नेकियों वाली थीं। अल्लाह तआला मरहूमा से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन रफ़ीउद्दीन बट साहब का है। यह छ: दिसम्बर को 92 वे वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन। आप हज़रत मौलवी ख़ैरुद्दीन साहब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आपने जवानी में वसीयत के निज़ाम में शामिल होने की तौफ़ीक़ पाई। विभिन्न स्थानों पर जमाअत की सेवाओं का अवसर मिला। बद्दू मिलही ज़िला नारोवाल के सदर जमाअत और अमीर हलक़ा भी रहे। वहां कैन्ट जमाअत के सदर भी रहे। क़ैद में होने का भी इनको सम्मान मिला। पीछे रहने वालों में चार बेटियां और एक बेटा शामिल हैं। और उनके एक दामाद नसीम अहमद साहब नाइजेरिया में मुबल्लिग़ के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। इन समस्त मरहूमीन के दर्जात बुलंद करे अपने प्यारों के क़ुरब में जगह दे। नमाज़ के बाद जैसा कि मैंने कहा इनकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब अदा करूँगा।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का के कुफ़्फ़ार को उत्तर दिया कि यह कैसे हो सकता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो मक्का से बाहर रोके जाएं और मैं तवाफ़ करूँ!

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद, ज़ूनूरैन हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

ग़त्फ़ान का युद्ध , उहद का युद्ध, बैअत रिज़वान और सुलह हुदैबिया के हालात और घटनाओं का वर्णन।

यदि यह खबर दरुस्त है तो ख़ुदा की क़सम! हम इस जगह से उस वक़्त तक नहीं टलेंगे कि उस्मान का बदला न ले लें। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया आओ और मेरे हाथ पर हाथ रखकर यह अहद करो कि तुम में से कोई व्यक्ति पीठ नहीं दिखाएगा और अपनी जान पर खेल जाएगा परन्तु किसी हाल में अपनी जगह नहीं छोड़ेगा।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ग़ज़वात में शमूलीयत का वर्णन करता हूँ। जैसा कि बदर के युद्ध के बारे में यह वर्णन हो चुका है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु बदर के युद्ध में शामिल नहीं हो सके थे क्योंकि आपकी पत्नी हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सख़्त बीमार थीं इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को इरशाद फ़रमाया कि उनकी देखभाल के लिए मदीना में ठहरें और आप रज़ियल्लाहु अन्हु को बदर में शामिल होने वालों की तरह ही क़रार दिया। इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए बदर में शामिल होने वालों की तरह माल-ए-ग़नीमत में और प्रतिफल में हिस्सा निर्धारित फ़रमाया।

(उद्धरित शरह अल्लामा अज़्ज़रकानी अला अल्मवाहेदुल लदुनिया भाग 2, पृष्ठ 334 अध्याय गज़वा बदर कुब्रा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत, 1996 ई)

ग़त्फ़ान का युद्ध मुहर्रम या सफ़र 3 हिज्री में हुआ। ग़त्फ़ान के युद्ध के लिए नजद के इलाक़े की तरफ़ निकलते वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना का अमीर निर्धारित फ़रमाया तो इस दृष्टि से इस में भी शामिल नहीं हुए।

(उद्धरित अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3, पृष्ठ 41 उस्मान बिन अफ्फान, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत,1990 ई)

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 463)

इस ग़ज़वा की तफ़सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस प्रकार वर्णन फ़रमाई है कि

"बनू गत्फ़ान के कुछ क़बीले अर्थात बनू सअलबा बनू महारिब के लोग अपने एक प्रसिद्ध योद्धा दोसूर बिन हारिस की तहरीक पर फिर मदीना पर अचानक हमला कर देने की नीयत से नजद के एक स्थान ज़ी उम्र में जमा होने शुरू हुए लेकिन चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने दुश्मनों की हरकात और कार्यों का नियमित ज्ञान रखते थे, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनके इस ख़ूनी इरादे की समय पर सूचना हो गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक सचेत बुद्धि वाले जरनैल की तरह पेशबंदी के तौर पर साढ़े चार-सौ सहाबियों के समूह को अपने साथ लेकर मुहर्रम 3 हिज्री के आख़िर या सफ़र के शुरू में मदीना से निकले और तेज़ी के साथ कूच करते हुए ज़ी उम्र के क़रीब पहुंच गए। दुश्मन को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद की सूचना हुई तो इस ने झटपट आस-पास की पहाड़ीयों पर चढ़ कर अपने आपको सुरक्षित कर लिया और मुस्लमान ज़ी अमर में पहुंचे तो मैदान ख़ाली था। जबकि बनू सअल्बा का एक बदवी जिसका नाम जब्बाज़ था सहाबा के क़ाबू में आ गया जिसे क़ैद करके वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस से हालात पूछे तो मालूम हुआ कि बनू सअल्बा और बनू मुहारिब के सारे लोग पहाड़ियों में सुरक्षित हो गए हैं और वे खुले मैदान में मुसलमानों के सामने नहीं आएँगे। न चाहते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वापसी का हुक्म देना पड़ा परन्तु इस ग़ज़वा का इतना फ़ायदा ज़रूर हो गया कि उस वक़्त जो ख़तरा बनू गत्फ़ान की तरफ़ से पैदा हुआ था वह वक़्ती तौर पर टल गया।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 463)

उहद का युद्ध जो शवाल 3 हिज्री में हुआ था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उहद के युद्ध में शामिल हुए थे। पहले दो ग़ज़वात में तो (शामिल नहीं हुए थे इस उहद के युद्ध में शामिल हुए थे।) दौरान-ए-जंग सहाबा का एक गिरोह ऐसा था जो अचानक हमले और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर सुनकर मैदान से इधर उधर हो गया और एक वक़्त ऐसा आया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ केवल 12 सहाबा का एक छोटा सा गिरोह रह गया था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पहले गिरोह में से थे।

(उद्धरित शरह अल्लामा अज़्ज़रकानी अला अल्मवाहेदुल लदुनिया भाग 2, पृष्ठ 418-419 अध्याय गज़वा बदर कुब्रा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत, 1996 ई)

मुसलमानों ने जब क़ुरैश के लश्कर पर ग़लबा पा लिया और वे ग़नीमत का माल इकट्ठा करने लगे तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन पचास तीर अंदाज़ों को अपनी जगह नहीं छोड़ने का आदेश दिया था उन्होंने विजय को देखकर अपनी जगह को छोड़ दिया हालाँकि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें सख़्ती से अपनी जगह न छोड़ने का इरशाद फ़रमाया था। ख़ालिद बिन वलीद जो अभी मुस्लमान नहीं हुए थे उन्होंने यह दृश्य देखकर तुरन्त वहां से मुसलमानों पर हमला कर दिया। यह हमला ऐसा अचानक, अनपेक्षित और इस क़दर शदीद था कि मुस्लमान बिखर गए। इन बिखरने वाले सहाबा में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम भी वर्णन किया जाता है।

क़ुरआन शरीफ़ में इन लोगों के सम्बन्ध में वर्णन आता है कि उस वक़्त के ख़ास हालात और उन लोगों के दिल्ली ईमान और इख़लास को दृष्टिगत रखते हुए अल्लाह तआला ने उन्हें माफ़ फ़र्मा दिया। इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ۔

(आले-इमरान 156)

निसंदेह तुम में से वे लोग जो उस दिन फिर गए जिस दिन दो गिरोह टकराए निसंदेह शैतान ने उन्हें फुसला दिया था कुछ ऐसे कर्मों के कारण से जो उन्होंने किए और निसन्देह अल्लाह उनसे क्षमा कर चुका है। निसन्देह अल्लाह बहुत बख़्शने वाला और बहुत सहनशील है।

इस ग़ज़वा के दौरान मुसलमानों की इस अवस्था का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातम नबिय्यीन में लिखा है कि :-

"क़ुरैश के लश्कर ने क़रीबन चारों तरफ़ घेरा डाल रखा था और अपने एक के बाद एक हमले से हर समय दबाता चला आता था। इस पर भी मुस्लमान शायद थोड़ी देर बाद सँभल जाते परन्तु ग़ज़ब यह हुआ कि क़ुरैश के एक बहादुर सिपाही अब्दुल्लाह बिन कमियाह ने मुसलमानों के झंडा उठाने वाले मुसअब बिन उमेर पर हमला किया और अपनी तलवार के वार से उनका दायाँ हाथ काट गिराया। मसअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुरन्त दूसरे हाथ में झंडा थाम लिया और इब्ने कय्य्मा के मुक़ाबला के लिए आगे बढ़े परन्तु उसने दूसरे वार में उनका दूसरा हाथ भी काट दिया। इस पर मसअब ने अपने दोनों कटे हुए हाथों को जोड़ कर गिरते हुए इस्लामी झंडे को सँभालने की कोशिश की और उसे छाती से चिमटा लिया। जिस पर इब्ने कय्य्मा ने उन पर तीसरा वार किया और अब की दफ़ा मसअब शहीद हो कर गिर गए। झंडा तो किसी दूसरे मुस्लमान ने तुरन्त आगे बढ़कर थाम लिया परन्तु चूँकि मसअब रज़ियल्लाहु अन्हु का आकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलता था इब्ने कय्य्मा ने समझा कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मार दिया है या यह भी संभव है कि उस की तरफ़ से यह परामर्श केवल शरारत और धोखा देने के ख़्याल से हो। बहरहाल उसने मसअब रज़ियल्लाहु अन्हु के शहीद हो कर गिरने पर शोर मचा दिया कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मार दिया है। इस ख़बर से मुसलमानों की रही सही हिम्मत भी जाती रही और उनकी लोग बिल्कुल बिखर गए और बहुत से सहाबी भयभीत कर मैदान से भाग निकले। उस वक़्त मुस्लमान तीन हिस्सों में बटे थे। एक गिरोह वह था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर सुनकर मैदान से भाग गया था परन्तु यह गिरोह सबसे छोटा था "या यह कह दें कि निराश हो कर मुंतशिर हो गया था। "उन लोगों में हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल थे परन्तु जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन आता है उस वक़्त के ख़ास हालात और उन लोगों के दिल्ली ईमान और श्रद्धा को दृष्टिगत रखते हुए अल्लाह तआला ने उन्हें

माफ़ फ़र्मा दिया। उन लोगों में से कुछ मदीना तक जा पहुंचे और इस तरह मदीना में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की काल्पनिक शहादत और इस्लाम के लश्कर की हार की ख़बर पहुंच गई जिससे समस्त शहर में एक कुहराम मच गया और मुस्लमान मर्द औरत बच्चे बूढ़े निहायत भ्रम की स्थिति में शहर से बाहर निकल आए और उहद की तरफ़ रवाना हो गए और कुछ तो जल्द जलद दौड़ते हुए मैदाने जंग में पहुंचे और अल्लाह का नाम लेकर दुश्मन की सफ़ों में घुस गए। दूसरे गिरोह में वे लोग थे जो भागे तो नहीं थे परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर सुनकर या तो हिम्मत हार बैठे थे और या अब लड़ने को बेकार समझते थे और इसलिए मैदान से एक तरफ़ हट कर सिर झुका कर बैठ गए। तीसरा गिरोह वह था जो बराबर लड़ रहा था। उनमें से कुछ तो वे लोग थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्दगिर्द जमा थे और अनुपमीय जाँनिसारी के जोहर दिखा रहे थे और अधिकतर वे थे जो मैदाने जंग में फैले हुए लड़ रहे थे। उन लोगों और तथा दूसरे गिरोह के लोगों को जूँ-जूँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवित मौजूद होने का पता लगता जाता था ये लोग दीवानों की तरह लड़ते भिड़ते आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्दगिर्द जमा होते जाते थे। उस वक़्त जंग की हालत यह थी कि क़ुरैश का लश्कर मानो समुंद्र की भयानक लहरों की तरह चारों तरफ़ से बढ़ा चला आता था और मैदान-ए-जंग में हर तरफ़ से तीर और पत्थरों की बारिश हो रही थी। जान कुर्बान करने वालों ने इस ख़तरा की हालत को देखकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्द-गिर्द घेरा डाल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिस्म मुबारक को अपने शरीरों से छिपा लिया परन्तु फिर भी जब कभी हमला की लहर उठती थी तो ये कुछ गिनती के आदमी इधर उधर धकेल दिए जाते थे और ऐसी हालत में कभी कबार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़रीबन अकेले रह जाते थे।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 493-494)

बहरहाल इस में यह वर्णन किया जाता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु निराश हो कर या किसी वजह से उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर सुन कर वहां से चले गए थे और इसी तरह निराश हो कर बैठने वालों में नहीं थे लेकिन बैठने वालों में हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु का भी वर्णन आता है। बहरहाल वह तो अपने वक़्त पर वर्णन होगा।

अब मैं वर्णन करता हूँ सुलह हुदैबिया के अवसर पर जो कूटनीति हुई और बैअत-ए-रिज़वान हुई इस में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का किरदार या आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में क्या घटनाएँ मिलती हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वप्न देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा अमन के साथ अपने सिरों के बाल कटाए हुए और बाल छोटे किए हुए बैतुल्लाह में दाख़िल हो रहे हैं। इस स्वप्न के आधार पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुल क़ादा 6 हिज्री में अपने चौदह सौ अस्हाब के साथ उम्रे की अदायगी के लिए मदीना से निकले। हुदैबिया के स्थान पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पड़ाव किया। क़ुरैश ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उम्रे की अदायगी से रोका। दोनों समूहों के मध्य जब कूटनीति का आग़ाज़ हुआ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के जोश की हालत सुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया किसी ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति को मक्का में भिजवाया जाए जो मक्का ही का रहने वाला हो और क़ुरैश के किसी सम्मानित क़बीले से सम्बन्ध रखता हो।

(उद्धरित शरह अल्लामा अज़्ज़रकानी अला अल्मवाहेदुल लदुनिया लिल्कस्तलानी भाग 2, पृष्ठ 169-170,222 अमर अलहदीद, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत,1996 ई)

इसलिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को इस उद्देश्य के लिए भिजवाया गया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस का जो विस्तार वर्णन किया है उस में से कुछ वर्णन करता हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्वप्न देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा के साथ बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे हैं। उस वक़्त जुल क़ादा का महीना क़रीब था जो ज़माना जाहिलियत में भी उन चार मुबारक महीनों में से समझा जाता था जिनमें हर तरह का जंग मना था। मानो एक तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह स्वप्न देखा और दूसरी तरफ़ यह वक़्त भी ऐसा था कि जब अरब के ज़मीन में जंग का सिल्सिला रुक कर शान्ति हो जाती थी। जबकि यह हज के दिन नहीं थे और अभी तक इस्लाम में हज नियमित तौर पर निर्धारित भी नहीं हुआ था लेकिन ख़ाना कअबा का तवाफ़ हर वक़त हो सकता था। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस स्वप्न देखने के बाद अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से तहरीक फ़रमाई कि उमरा के लिए तैयारी कर लें। इस अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा में यह भी ऐलान फ़रमाया कि चूँकि इस यात्रा में किसी किस्म का जंगी मुक़ाबला लक्ष्य नहीं है बल्कि केवल एक शांतिप्रिय धार्मिक इबादत करना लक्ष्य है इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि इस यात्रा में अपने हथियार साथ न लें। जबकि अरब के नियम के अनुसार केवल अपनी तलवारों को नियामों के अंदर बंद करके यात्रा करने वाले यात्री की तरह अपने साथ रखा जा सकता है और साथ ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना के आसपास के बदवी लोगों में भी जो ज़ाहिर में मुसलमानों के साथ थे यह तहरीक फ़रमाई कि वे भी हमारे साथ शामिल हो कर उमरा की इबादत बजा करें परन्तु अफ़सोस है कि एक निहायत थोड़ी सी संख्या के अतिरिक्त इन मुस्लमान कहलाने वाले कमज़ोर ईमान बदवी लोगों ने जो मदीना के आसपास आबाद थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ निकलने से परहेज किया क्योंकि उनका ख़्याल था कि चाहे मुसलमानों की नीयत उमरा के अतिरिक्त कुछ नहीं परन्तु क़ुरैश बहरहाल मुसलमानों को रोकेंगे और इस तरह मुक़ाबले की अवस्था पैदा हो जाएगी और वे समझते थे कि चूँकि यह मुक़ाबला मक्का के क़रीब और मदीना से दूर होगा इसलिए कोई मुस्लमान बच कर वापस नहीं आ सकेगा। इसलिए डर कर वह इस में शामिल नहीं हुए। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चौदह सौ सहाबियों से कुछ अधिक की संख्या के साथ जुलक़अदा 6 हिज्री के शुरू में ही सोमवार के दिन सुबह के वक़्त मदीना से रवाना हुए। इस यात्रा में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी श्रीमती हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थीं और मदीना का अमीर नुअमाना बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को और नामज़ का इमाम अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु को जो आँखों से अंधे थे निर्धारित किया गया था।

जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुलहज्जा में पहुंच गए जो मदीना से क़रीबन छ: मील की दुरी पर मक्का के रास्ते पर वाक़्य है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ठहरने का हुक्म दिया और नमाज़ ज़ुहर की अदायगी के बाद क़ुर्बानी के ऊंटों को जो संख्या में सत्तर थे निशान लगाए जाने का इरशाद फ़रमाया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को हिदायत फ़रमाई कि वे हाजियों का विशेष वस्त्र जो पारिभाषिक रूप से एहराम कहलाता है पहन लें और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद भी एहराम बांध लिया और फिर क़ुरैश के हालात का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कि वे किसी शरारत का इरादा तो नहीं रखते एक संदेशक बसर बिन सुफ़ियान नामी के जो क़बीला ख़ुज़ाआ से सम्बन्ध रखता था, जो मक्का के निकट आबाद था, आगे भिजवा कर आहिस्ता-आहिस्ता मक्का की तरफ़ रवाना हुए और अधिक सावधानियों के तौर पर मुसलमानों की बड़ी संख्या के आगे-आगे रहने के लिए अब्बाद बिन बिश्र की कमान में बीस सवारों का एक दस्ता भी निर्धारित फ़रमाया। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ दिनों की यात्रा के बाद उसके क़रीब पहुंचे जो मक्का से लगभग दो मंज़िल के रास्ता पर स्थित है। (कहा जाता है कि एक मंज़िल नौ मील की होती है। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संदेशक ने वापस आकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में सूचना दी कि मक्का के क़ुरैश बहुत जोश में हैं और आप को रोकने का पुख़्ता पर्ण किए हुए हैं। यहाँ तक कि उनमें से कुछ ने अपने जोश और वहशत के इज़्हार के लिए चीतों की खालें पहन रखी हैं और जंग का पक्का पर्ण कर के प्रत्येक अवस्था में मुसलमानों को रोकने का इरादा रखते हैं। यह भी मालूम हुआ कि क़ुरैश ने अपने कुछ जाँबाज़ सवारों का एक दस्ता ख़ालिद बिन वलीद की कमान में जो उस वक़्त तक मुस्लमान नहीं हुए थे आगे भिजवा दिया है और यह कि यह दस्ता उस वक़्त मुसलमानों के क़रीब पहुंचा हुआ है और इस दस्ता में अक़रमा पुत्र अबुजहल भी शामिल है इत्यादि। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ख़बर सुनी तो टकराव से बचने के उद्देश्य से सहाबा को हुक्म दिया कि मक्का के प्रसिद्ध रास्ते को छोड़कर दाएं तरफ होते हुए आगे बढ़ें। इसलिए मुस्लमान एक अत्यधिक मुश्किल और कठिन मार्ग पर पड़ कर समुंद्र की तरफ से होते हुए आगे बढ़ने शुरू हुए। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस नए रास्ता पर चलते हुए हुदैबिया के क़रीब पहुंचे जो मक्का से एक मंज़िल अर्थात केवल नौ मील की दूरी पर है और हुदैबिया की घाटियों पर से मक्का की वादी का आरम्भ हो जाता है तो आप की ऊंटनी जो कुस्वा के नाम से प्रसिद्ध थी और बहुत सी जंगों में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस्तिमाल में रह चुकी थी एकदम पांव फैला कर ज़मीन पर बैठ गई और बावजूद उठाने के उठने का नाम न लेती थी। सहाबा ने निवेदन किया कि शायद यह थक गई है परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं नहीं। यह थकी नहीं और न ही इस तरह थक कर बैठ जाना इसकी आदत में दाख़िल है बल्कि हक़ यह है कि जिस सर्व शक्तिमान ने इस से पहले हाथी वालों के हाथी को मक्का की तरफ़ बढ़ने से रोका था उसी ने अब इस ऊंटनी को भी रोका है। अत: ख़ुदा की क़सम ! मक्का के क़ुरैश जो मांग भी हर्म के सम्मान के लिए मुझ से करेंगे मैं उसे स्वीकार करूँगा। यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ऊंटनी को फिर उठने की आवाज़ दी और ख़ुदा की क़ुदरत कि इस बार वह झट उठकर चलने को तैयार हो गई। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे हुदैबिया की वादी के दुसरे किनारे की तरफ़ ले गए और वहां एक चश्मा के पास ठहर कर ऊंटनी से नीचे उतर आए और इसी जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमाने पर सहाबा ने डेरे डाल दिए।

फिर यहां आगे वर्णन आता है कि क़ुरैश के साथ सुलह की बात चीत का आग़ाज़

किस तरह हुआ। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया की वादी में पहुंच कर क़ियाम फ़रमाया तो इस वादी के चशमा के पास क़ियाम किया। जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु उस जगह डेरे डाल चुके तो क़बीला ख़ुज़ा के एक प्रसिद्ध रईस बुदेल बिन वर्क़ा नामी जो क़रीब ही के इलाक़ा में आबाद था अपने कुछ साथियों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात के लिए आया और उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि मक्का के सरदार जंग के लिए तैयार खड़े हैं और वे कभी भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का में दाख़िल नहीं होने देंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हम तो जंग की उद्देश्य से नहीं आए बल्कि केवल उमरा की नीयत से आए हैं और अफ़सोस है कि बावजूद इसके कि मक्का के क़ुरैश को जंग की आग ने जला-जला कर ख़ाक कर रखा है परन्तु फिर भी यह लोग रुकते नहीं और मैं तो उन लोगों के साथ इस समझौता के लिए भी तैयार हूँ कि वे मेरे विरुद्ध जंग बंद करके मुझे दूसरे लोगों के लिए आज़ाद छोड़ दें। मक्का वालों से में कोई युद्ध नहीं करता। कुछ उनसे सम्बन्ध नहीं रखूँगा और दूसरे लोगों को इस्लाम का संदेश पहुंचाऊंगा लेकिन यदि उन्होंने मेरे इस परामर्श को भी रद्द कर दिया और हर अवस्था में जंग की आग को भड़काए रखा तो मुझे भी उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि फिर मैं भी इस मुक़ाबला से उस वक़्त तक पीछे नहीं हटूंगा कि या तो मेरी जान इस रास्ता में क़ुर्बान हो जाए और या ख़ुदा मुझे विजय प्रदान करे। यदि मैं उनके मुक़ाबला में आकर मिट गया तो क़िस्सा ख़त्म हुआ लेकिन यदि ख़ुदा ने मुझे फ़तह प्रदान की और मेरे लाए हुए धर्म को विजय प्राप्त हो गई तो फिर मक्का वालों को भी ईमान ले आने में कोई रोक नहीं होना चाहिए। बुदेल बिन वर्क़ा पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस मुख़लिसाना और दर्दमंदाना तक़रीर का बहुत प्रभाव हुआ और उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि आप मुझे कुछ मोहलत दें कि मैं मक्का जा कर आप का संदेश पहुंचाऊं और सुलह की कोशिश करूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज्ञा दे दी और बुदेल अपने क़बीला के कुछ आदमियों को अपने साथ लेकर मक्का की चला गया।

जब बुदेल बिन वर्क़ा मक्का में पहुंचा तो उस ने क़ुरैश को जमा करके कहा कि मैं उस व्यक्ति अर्थात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से आ रहा हूँ और मेरे सामने उसने एक परामर्श पेश किया है यदि आप आज्ञा दें तो मैं उसका वर्णन करूँ। इस पर क़ुरैश के जोशीले और ग़ैर ज़िम्मेदार लोग कहने लगे कि हम उस व्यक्ति की कोई बात सुनने के लिए तैयार नहीं परन्तु बुद्धिमान लोगों ने कहा। हाँ जो परामर्श भी है वह हमें बताओ। इसलिए बुदेल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वर्णन किए परामर्श को दोहराया। इस पर एक व्यक्ति उर्वाह बिन मसऊद नामी जो क़बीला सकीफ़ का एक बहुत प्रभावी सरदार था और उस वक़्त मक्का में मौजूद था खड़ा हो गया और पुराने अरबी ढ़ंग में क़ुरैश से कहने लगा कि हे लोगो क्या मैं तुम्हारे बाप की जगह नहीं हूँ? उन्होंने कहा हाँ। फिर उसने कहा क्या आप लोग मेरे बेटों की तरह नहीं हैं? उन्होंने कहा हाँ। फिर उर्वाह ने कहा क्या तुम्हें मुझ पर किसी किस्म का अविश्वास है? क़ुरैश ने कहा कदापि नहीं। इस पर उसने कहा कि फिर मेरी यह राय है कि इस व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपके सामने एक उचित बात पेश की है। आपको चाहिए कि उस के परामर्श को स्वीकार कर लो और मुझे आज्ञा दें कि मैं आपकी तरफ़ से मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास जा कर और अधिक वार्ता करूँ। क़ुरैश ने कहा बे-शक आप जाएं और वार्ता करें।

जब वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में पहुंचा तो उस वक़्त वहां एक ईमान वर्धक दृश्य भी उसने देखा। उर्वाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ वार्ता शुरू की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके सामने अपनी वही तक़रीर दोहराई जो इस से पूर्व बुदेल बिन वर्का के सामने फ़र्मा चुके थे। उर्वाह उसूलन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राय के साथ सहमत था परन्तु क़ुरैश के दूत का हक़ अदा करना और उनके हक़ में अधिक से अधिक शर्तें सुरक्षित कराना चाहता था। उर्वाह के साथ वार्ता ख़त्म करके क़ुरैश की तरफ़ लौटा और जाते ही क़ुरैश से कहने लगा। हे लोगो मैं ने दुनिया में बहुत यात्रा की हैं। बादशाहों के दरबार में शामिल हुआ हूँ और क़ैसर और किसरा और नजाशी के सामने बतौर वफ़द के पेश हो चुका हूँ परन्तु ख़ुदा की क़सम जिस तरह मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के सहाबियों को मुहम्मद का सम्मान करते देखा है ऐसा मैंने किसी और जगह नहीं देखा। फिर उसने अपना वह सारा आखों देखा हाल वर्णन किया जो उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में देखा था और आख़िर में कहने लगा कि मैं फिर यही मश्वरा देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का परामर्श एक न्यायपूर्ण परामर्श है इसे स्वीकार कर लेना चाहिए।

उर्वाह की यह वार्ता सुनकर क़बीला बनी कनाना के एक रईस ने जिसका नाम हुलैस बिन अल्कमा क़ुरैश से कहा यदि आप लोग पसंद करें तो मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास जाता हूँ। उन्होंने कहा हाँ बे-शक जाओ। इसलिए यह व्यक्ति हुदैबिया में आया और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे दूर से आते देखा तो सहाबहु से फ़रमाया यह व्यक्ति जो हमारी तरफ़ आ रहा है ऐसे क़बीला से सम्बन्ध रखता है जो क़ुर्बानी के दृश्य को पसंद करते हैं। अत: अपने क़ुर्बानी के जानवरों को इकट्ठा करके उसके सामने लाओ ताकि उसे पता लगे और एहसास पैदा हो कि हम किस उद्देश्य से आए हैं। इसलिए सहाबा अपने क़ुर्बानी के जानवरों को हँकाते हुए और तक्बीरों की आवाज़ बुलंद करते हुए उस के सामने जमा हो गए। जब उसने यह नज़ारा देखा तो कहने लगा। सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह ये तो हाजी लोग हैं। इन्हें बैयतुल्लाह के तवाफ़ से किसी तरह रोका नहीं जा सकता। इसलिए वह जल्दी ही क़ुरैश की तरफ़ वापस लौट गया और क़ुरैश से कहने लगा मैं ने देखा है कि मुसलमानों ने अपने जानवरों के गले में क़ुर्बानी के हार बांध रखे हैं और उन पर क़ुर्बानी के निशान लगाए हुए हैं। अत: यह किसी तरह उचित नहीं कि उन्हें कअबा के तवाफ़ से रोका जाए।

क़ुरैश में उस वक़्त एक सख़्त बेचेनी की अवस्था पैदा हो रही थी और लोगों की दो पार्टीयां बन गई थीं। एक पार्टी हर सूरत में मुसलमानों को वापस लौटाने पर डटी थी और मुक़ाबला के विचार पर सख़्ती से क़ायम थी परन्तु दूसरी पार्टी उसे अपनी पुरानी धार्मिक परंपराओं के विरुद्ध पा कर भयभीत हो रही थी और किसी सम्मानित समझौता की आशा रखती थी। इसलिए फ़ैसला लटका हुआ था। इस अवसर पर एक अरबी रईस मिकर्ज़ बिन हफ्ज़ ने क़ुरैश से कहा कि मुझे जाने दो। मैं कोई फ़ैसले की राह निकालूँगा। क़ुरैश ने कहा अच्छा तुम भी कोशिश करके देख लो। इसलिए वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे दूर से आते देखा तो फ़रमाया ख़ुदा ख़ैर करे यह आदमी तो अच्छा नहीं। बहरहाल मिकर्ज़ आप के पास आया और वार्ता करने लगा परन्तु अभी वह बात कर ही रहा था कि मक्का का एक प्रसिद्ध रईस सुहेल बिन अम्र आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ जिसे शायद क़ुरैश ने अपनी घबराहट में मकर्ज़ की वापसी की प्रतीक्षा करने के बिना भिजवा दिया था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुहैल को आते देखा तो फ़रमाया यह सुहैल आता है। अब ख़ुदा ने चाहा तो मामला आसान हो जाएगा।

बहरहाल यह बातचीत होती रही। इस अवसर पर यह घटना भी हुई कि जब क़ुरैश की तरफ़ से एक के बाद एक सफ़ीर आने शुरू हुए तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह महसूस करके कि आपकी तरफ़ से भी कोई समझदार व्यक्ति क़ुरैश की तरफ़ जाना चाहिए जो उन्हें हमदर्दी और दुद्धिमता के साथ मुसलमानों का दृष्टिकोण समझा सके एक व्यक्ति ख़िराश बिन उमय्यह को इस काम के लिए चुना जो क़बीला ख़ुज़ा से सम्बन्ध रखते थे। अर्थात वही क़बीला जिससे क़ुरैश के सबसे पहले सफ़ीर बुदेल बिन वर्का का सम्बन्ध था और इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़िराश को सवारी के लिए ख़ुद अपना एक ऊंट अता फ़रमाया। ख़िराश क़ुरैश के पास गए परन्तु चूँकि अभी यह वार्ता का आरंभिक दौर था और नौ क़ुरैश के जवान बहुत जोश में थे। एक जोशीले नौजवान अक्रमा बिन अबुजहल ने ख़राश के ऊंट पर हमला करके उसे ज़ख़्मी कर दिया जिस के अरबी नियम के अनुसार यह अर्थ थे कि हम तुम्हारी आने जाने को ज़बरदस्ती रोकते हैं। इसके अतिरिक्त क़ुरैश की यह जोशीली पार्टी ख़ुद ख़िराश पर भी हमला करना चाहती थी मगर बड़े बूढ़ों ने बीच बचाओ करके उसकी जान बचाई और वह इस्लामी कैंप में वापस आ गया। कुफ़्फ़ार की तरफ़ से वह वापस आ गया। मक्का के क़ुरैश इसी पर ही नहीं रुके बल्कि अपने जोश में अंधे हो कर इस बात का भी इरादा किया कि अब जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा मक्का से इस क़दर क़रीब और मदीना से इतनी दूर आए हुए हैं तो उन पर हमला करके जहां तक संभव हो नुक़्सान पहुंचाया जाए। इसलिए इस उद्देश्य के लिए उन्होंने चालीस पचास आदमियों की एक पार्टी हुदैबिया की तरफ़ रवाना की और इस वार्ता के पर्दे में जो उस वक़्त दोनों समूहों में जारी थी उन लोगों को हिदायत दी कि इस्लामी कैंप के इर्द-गिर्द घूमते हुए ताक में रहें और अवसर पाकर मुसलमानों का नुक़्सान करते रहें बल्कि कुछ रिवायतों से यहां तक पता लगता है कि ये लोग संख्या में 80 थे और इस अवसर पर क़ुरैश ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल की भी योजना की थी परन्तु बहरहाल ख़ुदा के फ़ज़ल से मुस्लमान अपनी जगह होशियार थे। इसलिए क़ुरैश की इस साज़िश का राज़ खुल गया और ये लोग सबके सब गिरफ़्तार कर लिए गए। मुसलमानों को मक्का वलों की इस हरकत का जो पवित्र न हरम के महीने में हराम के इलाक़ा में की गई थी सख़्त गुस्सा था परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों को माफ़ फ़र्मा दिया और सुलह की वार्ता में रोक न पैदा होने दी। मक्का वालों की इस हरकत का क़ुरआन शरीफ़ ने भी वर्णन किया है इस लिए फ़रमाता है।

هُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا۔ (अल्फ़तह :25)

अर्थात ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से कुफ़्फ़ार के हाथों को मक्का की वादी मैं तुम से रोक कर रखा और तुम्हारी सुरक्षा की और फिर जब तुमने उन लोगों पर विजय प्राप्त कर ली और उन्हें अपने क़ाबू में कर लिया तो ख़ुदा ने तुम्हारे हाथों को इन से रोक कर रखा।

बहरहाल जब हम इन समस्त हालात और इस पृष्ठभूमि में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निरंतर धैर्य और हौसला और अमन की कोशिश को देखते हैं जो चरम को पहुंचा हुआ है तो हमें नज़र आता है कि वह एक सब्र और अमन की कोशिश है जिसका कोई उदाहरण दुनिया में नहीं मिल सकता। आप निरन्तर इस कोशिश में थे कि अमन की सूरत पैदा हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब क़ुरैश की शरारत को देखा और साथ ही ख़िराश बिन उमय्या से मक्का वालों के जोशो का हाल सुना तो क़ुरैश को ठंडा करने और सतमार्ग पर लाने के उद्देश्य से इरादा फ़रमाया कि किसी ऐसे प्रभावी व्यक्ति को मक्का में भिजवाया जाए जो मक्का ही का रहने वाला हो और क़ुरैश के किसी सम्मानित क़बीला से सम्बन्ध रखता हो। अर्थात उसके बाद भी आपने कोशिश छोड़ी नहीं बल्कि फिर भी यह रिस्क (risk) लिया कि किसी को दुबारा भेजना चाहिए। इसलिए आपने हज़रत उम्र बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि बेहतर होगा कि आप मक्का में जाएं और मुसलमानों की तरफ़ से राजदूत का कर्तव्य अदा करें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह ! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप जानते हैं कि मक्का के लोग मेरे सख़्त दुश्मन रहे हैं और इस वक़्त मक्का में मेरे क़बीला का कोई प्रभावी आदमी मौजूद नहीं जिसका मक्का वालों पर दबाओ हो। इसलिए मेरा मश्वरा है कि कामयाबी का रास्ता आसान करने के लिए इस सेवा के लिए उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना जाए जिनका क़बीला बनू उमय्या में इस वक़्त बहुत प्रभाव वाला है और मक्का वाले उस्मान के विरुद्ध शरारत का साहस नहीं कर सकते और यदि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा जाए तो कामयाबी की ज़्यादा आशा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस मश्वरा को पसंद फ़रमाया और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से इरशाद फ़रमाया कि वह मक्का जाएं और क़ुरैश को मुसलमानों के शांतिप्रिय इरादों और उमरा की नीयत से अवगत करें और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी तरफ़ से एक तहरीर भी लिख कर दी जो क़ुरैश के सरदारों के नाम थी। इस तहरीर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आने का उद्देश्य वर्णन किया और क़ुरैश को विश्वास दिलाया कि हमारी नीयत केवल एक इबादत करने की है और हम शांतिप्रिय अवस्था में उमरा करके वापस चले जाऐंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से यह भी फ़रमाया कि मक्का में जो कमज़ोर मुस्लमान हैं उन्हें भी मिलने की कोशिश करना और उन की हिम्मत बढ़ाना और कहना कि ज़रा और सब्र से काम लें। ख़ुदा शीघ्र सफ़लता का द्वार खोलने वाला है। यह संदेश लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का में गए और अबू सुफ़ियान से मिलकर जो उस ज़माना में मक्का का सबसे बड़ा सरदार था और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का क़रीबी प्रिय भी था मक्का वालों के एक आम सभा में प्रस्तुत हुए। इस सभा में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तहरीर पेश की जो विभिन्न क़ुरैश के सरदारों ने अकेले अकेले भी देखी परन्तु इसके अतिरिक्त सब लोग अपनी इस ज़िद पर क़ायम रहे कि बहरहाल मुस्लमान इस वर्ष मक्का में दाख़िल नहीं हो सकते। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ोर देने पर क़ुरैश ने कहा कि यदि तुम्हें ज़्यादा शौक़ है तो हम तुम को बैयतुल्लाह के तवाफ़ का अवसर दे देते हैं परन्तु इस से ज़्यादा नहीं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह कैसे हो सकता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो मक्का से बाहर रोके जाएं और मैं तवाफ़ करूँ! परन्तु क़ुरैश ने किसी तरह नहीं मानी और अंततः हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु निराश हो कर वापस आने की तैयारी करने लगे। इस अवसर पर मक्का के शरीर लोगों को यह शरारत सूझी कि उन्होंने शायद इस ख़्याल से कि इस तरह हमें समझौते में ज़्यादा लाभदायक शर्तें प्राप्त हो सकेंगी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों को मक्का में रोक लिया। इस पर मुसलमानों में यह अफ़्वाह प्रसिद्ध हुई कि मक्का वालों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल कर दिया है। यह ख़बर जब पहुंची तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी बहुत ग़ुस्सा और सदमा था। तब आपने वहां बैअत रिज़वान ली।

इसके बारे में लिखा है। यह ख़बर हुदैबिया में पहुंची तो मुसलमानों में सख़्त जोश पैदा हुआ क्योंकि उस्मान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद और

पृष्ठ 1 का शेष

सम्मानित सहाबा में से थे मक्का में बतौर इस्लामी दूत के गए थे और ये दिन भी हुर्मत वाले महीने के दिन थे, हुर्मत वाला महीना था और फिर मक्का ख़ुद हर्म का इलाक़ा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुरन्त समस्त मुसलमानों में ऐलान करके उन्हें एक बबूल अर्थात कीकर के पेड़ के नीचे एकत्र किया और जब सहाबा एकत्र हो गए तो इस ख़बर का वर्णन कर के फ़रमाया कि यदि यह सूचना सही है तो ख़ुदा की क़सम हम इस जगह से उस वक़्त तक नहीं टलेंगे कि उस्मान का बदला न ले लें। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया आओ और मेरे हाथ पर हाथ रखकर जो इस्लाम में बैअत का तरीक़ा है यह अहद करो कि तुम में से कोई व्यक्ति पीठ नहीं दिखाएगा और अपनी जान पर खेल जाएगा परन्तु किसी हाल में अपनी जगह नहीं छोड़ेगा। इस ऐलान पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु बैअत के लिए इस तरह लपके कि एक दूसरे पर गिरेते पड़ेते थे और उन चौदह पंद्रह सौ मुसलमानों का यही उस वक़्त इस्लाम की जमा पूँजी थी, कुल मुस्लमान थे, एक एक व्यक्ति अपने महबूब आक़ा के हाथ पर मानो कि दूसरी दफ़ा बिक गया। जब बैअत हो रही थी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना बायां हाथ अपने दाएं हाथ पर रखकर फ़रमाया कि यह उस्मान का हाथ है क्योंकि यदि वह यहां होता तो इस मुक़द्दस सौदे में किसी से पीछे नहीं रहते लेकिन इस वक़्त वह ख़ुदा और उसके रसूल के काम में मसरूफ़ है। इस तरह यह बिजली का दृश्य अपने अंत को पहुंचा।

इस्लामी तारीख़ में यह बैअत, बैअत-ए-रिज़वान के नाम से प्रसिद्ध है अर्थात वह बैअत जिसमें मुसलमानों ने ख़ुदा की पूर्ण रजामंदी का इनाम प्राप्त किया। क़ुरआन शरीफ़ ने भी इस बैअत का विशेषता वर्णन फ़रमाया है। इसलिए फ़रमाता है

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا۔ (फ़तेह: 19)

अर्थात अल्लाह तआला ख़ुश हो गया मुसलमानों से जब कि हे रसूल! वे एक दरख़्त के नीचे तेरी बैअत कर रहे थे क्योंकि इस बैअत से उनके दलों का छुपा हुआ इख़लास ख़ुदा के ज़ाहिरी इल्म में आ गया अतः ख़ुदा ने भी उन पर संतावना नाज़िल फ़रमाई और उन्हें एक क़रीब की फ़तह का इनाम अता किया।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु भी हमेशा इस बैअत को बड़े फ़ख़र और मुहब्बत के साथ वर्णन किया करते थे और उनमें से अधिकतर बाद में आने वाले लोगों से कहा करते थे कि तुम तो मक्का की फ़तह को फ़तह शुमार करते हो परन्तु हम बैअत रिज़वान ही को फ़तह ख़्याल करते थे और इस में संदेह नहीं कि यह बैअत अपनी पृष्ठभूमि के साथ मिलकर एक निहायत महान फ़तह थी। न केवल इसलिए कि उसने आइन्दा फ़ुतूहात का दरवाज़ा खोल दिया बल्कि इसलिए भी कि इससे इस्लाम की इस जान क़ुर्बान करने वाली रूह का जो मुहम्मद के धर्म का मानो कि केंद्र बिंदु है एक निहायत शानदार रंग में प्रकट हुआ और इस्लाम पर फ़िदा होने वालों ने अपने अनुकरण से बता दिया कि वह अपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई सच्चाई के लिए हर मैदान में और इस मैदान के हर क़दम पर जीने और मरने के सौदे के लिए तैयार हैं। इसीलिए सहाबा किराम रज़ि बैअत रिज़वान का वर्णन करते हुए कहा करते थे कि यह बैअत मौत के अहद की बैअत थी अर्थात इस अहद की बैअत थी कि हर मुस्लमान इस्लाम के लिए और इस्लाम के सम्मान के लिए अपनी जान पर खेल जाएगा परन्तु पीछे नहीं हटेगा और इस बैअत का ख़ास पहलू यह था कि यह अहद केवल मुँह का एक वक़्ती इक़रार नहीं था जो अस्थाई जोश की हालत में कर दिया गया हो बल्कि दिल की गहराईयों की आवाज़ थी जिसके पीछे मुसलमानों की सारी ताक़त एक नुक़्ता-ए-वाहिद पर जमा थी।

जब क़ुरैश को इस बैअत की सूचना पहुंची तो वे भयभीत हो गए और न केवल हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों को आज़ाद कर दिया बल्कि अपने एलचियों को भी हिदायत दी कि अब जिस तरह भी हो मुसलमानों के साथ अनुबंध कर लें परन्तु यह शर्त ज़रूर रखी जाए कि इस वर्ष के बजाय मुस्लमान अगले वर्ष आ कर उमरा करेंगे और बहरहाल अब वापस चले जाएं। दूसरी तरफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी आरंभ से यह अहद कर चुके थे कि मैं इस अवसर पर कोई ऐसी

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 25 February 2021 Issue No.8

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

बात नहीं करूँगा जो मुहर्रम के महीने और बैयतुल्लाह के सम्मान के विरुद्ध हो और चूँकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा ने यह खुशख़बरी दे रखी थी कि इस अवसर पर क़ुरैश के साथ समझौता आगे सफ़लता की चाबी बनने वाली है इसलिए मानो कि दोनों समूहों की दृष्टि में यह माहौल समझौते का एक निहायत उचित माहौल था और इसी माहौल में सुहैल बिन अम्र आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देखते ही फ़रमाया कि अब मामला आसान होता नज़र आता है। सुलह की वार्ता शुरू हुई जब सुहैल बिन अम्र आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देखते ही फ़रमाया जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि सुहेल आता है। अब ख़ुदा ने चाहा तो मामला आसान हो जाएगा। बहरहाल सुहैल आया और आते ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहने लगा। आओ जी अब लम्बी बहस जाने दो। हम अनुबंध के लिए तैयार हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम भी तैयार हैं और इस इरशाद के साथ ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सैक्रेटरी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया। इस अनुबंध की शर्तें निम्नलिखित थीं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के साथी इस वर्ष वापस चले जाएं। अगले वर्ष वे मक्का में आकर उमरा की रस्म अदा कर सकते हैं परन्तु नयाम में बंद तलवार के कोई हथियार साथ न हो और मक्का में तीन दिन से अधिक न ठहरें।

यदि कोई मर्द मक्का वालों में से मदीना जाए तो चाहे वह मुस्लमान ही हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे मदीना में पनाह न दें और वापस लौटा दें। लेकिन यदि कोई मुस्लमान मदीना को छोड़ कर मक्का में आ जाए तो उसे वापस नहीं लौटाया जाएगा। एक और रिवायत में यह है कि यदि मक्का वालों में से कोई व्यक्ति अपने वली अर्थात गार्डियन (guardian) की आज्ञा के बिना मदीना आ जाए तो उसे वापस लौटा दिया जाएगा।

अरब के क़बीलों में से जो क़बीला चाहे मुसलमानों का सहयोगी बन जाए और जो चाहे मक्का वालों का। यह अनुबंध फ़िलहाल दस वर्ष तक के लिए होगा और इस अरसा में क़ुरैश और मुसलमानों के मध्य जंग बंद रहेगी।

इस अनुबंध की दो नकले की गईं और बतौर गवाह के दोनों समूहों के अत्यधिक सम्माननीय लोगों ने इन पर हस्ताक्षर किए। मुसलमानों की तरफ़ से हस्ताक्षर करने वालों में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु जो उस वक़्त तक मक्का से वापस आ चुके थे अर्थात कुफ़्फ़ार ने जो उनको रोका था तो उस वक़्त छोड़ दिया था। उन्होंने भी इस अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, साद बिन अबी विकास रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो थे। अनुबन्ध की तकमील के बाद सुहैल बिन अम्र अनुबंध की एक नक़ल लेकर मक्का की तरफ़ वापस लौट गया और दूसरी नक़ल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास रही।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 749.769)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस घटना को अपने शब्दों में इस तरह वर्णन फ़रमाया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कुछ इर्द-गिर्द के लोगों ने मक्का वालों से इसरार किया कि ये लोग केवल तवाफ़ के लिए आए हैं आप उनको क्यों रोकते हैं ? परन्तु मक्का के लोग अपनी ज़िद पर क़ायम रहे। इस पर बाहरी क़बीलों के लोगों ने मक्का वालों से कहा कि आप लोगों का यह तरीक़ बताता है कि आप को शरारत करनी है, सुलह नहीं करनी। इसलिए हम लोग आपका साथ देने के लिए तैयार नहीं हैं। यह एक नई बात है जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाई है कि इर्द-गिर्द के क़बीलों का भी प्रैशर (pressure) था। इस पर मक्का के लोग डर गए और उन्होंने इस बात पर तत्परता प्रकट की कि मुसलमानों के साथ समझौते की कोशिश करेंगे। जब इस बात की सूचना रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को जो बाद में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीसरे ख़लीफ़ा हुए, मक्का वालों से बातचीत करने के लिए भेजा। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का पहुंचे तो चूँकि मक्का में उनकी बड़ी अधिक रिश्तेदारी थी। उनके रिश्तेदार उनके गर्द इकट्ठे हो गए और उनसे कहा कि आप तवाफ़ करलें लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगले वर्ष आकर तवाफ़ करें परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं अपने आक़ा के बिना तवाफ़ नहीं कर सकता। चूँकि मक्का के सरदारों से

पृष्ठ 1 का शेष

की हिदायत दूसरों पर किस तरह छोड़ सकता था। या एक ज़माना के लोगों को हिदायत देकर बाद की नसलों को किस तरह वंचित रख सकता था। यदि पैदा करने वाला और होता और पैदाइश का सिल्सिला जारी रखने वाला और तब तो कह सकते थे कि पैदा करने वाले ने इस संसार के प्रारम्भ में हिदायत दे दी और प्रजनन के सिल्सिले के जारी रखने वाले ने परवा नहीं की। परन्तु जब पैदा करने वाला और पैदाइश के सिल्सिले को जारी रखने वाला एक ही रब है तो बाद में आने वाली नसलों को वह हिदायत से किस तरह वंचित कर सकता था।"

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 72 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

आपकी वार्ता लंबी हो गई तो मक्का में कुछ लोगों ने शरारत से यह ख़बर फैला दी कि उस्मान को क़तल कर दिया गया है और यह ख़बर फैलते फैलते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक जा पहुंची। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को जमा किया और फ़रमाया :-

दूत की जान हर क़ौम में सुरक्षित होती है। तुमने सुना है कि उस्मान को मक्का वालों ने मार दिया है। यदि यह ख़बर सही निकली तो हम अवश्य मक्का में दाख़िल होंगे। अर्थात हमारा पहला इरादा सुलह के साथ मक्का में दाख़िल होने का था, जिन हालात में वह किया गया था वह हालात चूँकि तब्दील हो जाऐंगे इसलिए हम इस इरादा के पाबन्द नहीं रहेंगे। जो लोग ये अहद करने के लिए तैयार हों कि यदि हमें आगे बढ़ना पड़ा तो या हम फ़तह करके लोटेंगे या एक एक कर के मैदान में मारे जाऐंगे वे इस अहद पर मेरी बैअत करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ये ऐलान करना था कि पंद्रह सौ देखने वाले लोग जो आप के साथ आए थे तुरन्त पंद्रह सौ सिपाही की शक्ल में बदल गया और दीवानों की तरह एक दूसरे पर फाँदते हुए उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर दूसरों से पहले बैअत करने की कोशिश की। यह बैअत समस्त इस्लामी तारीख़ में बहुत बड़ा महत्व रखती है और दरख़्त का अहदनामा कहलाती है क्योंकि जिस वक़्त यह बैअत ली गई उस वक़्त रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दरख़्त के नीचे बैठे थे। जब तक इस बैअत में शामिल होने वाला अंतिम आदमी भी संसार में जीवित रहा वह फ़ख़र से इस बात का वर्णन किया करता था क्योंकि पंद्रह सौ आदमियों में से एक व्यक्ति ने भी यह अहद करने से पीछे नहीं हटा था कि यदि दुश्मन ने इस्लामी राजदूत को मार दिया है तो आज दो स्थितियों में से एक ज़रूर पैदा करके छोड़ेंगे या वे शाम से पहले पहले मक्का को फ़तह करके छोड़ेंगे या शाम से पहले पहले मैदाने जंग में मारे जाऐंगे। लेकिन अभी बैअत से मुस्लमान फ़ारिग़ ही हुए थे कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु वापस आ गए और उन्होंने बताया कि मक्का वाले इस वर्ष तो उमराह की आज्ञा नहीं दे सकते परन्तु अगले वर्ष आज्ञा देने के लिए तैयार हैं। इसलिए इस बारे में अनुबंध करने के लिए उन्होंने अपने प्रतिनिधियों को निर्धारित कर दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आने के थोड़ी देर के बाद मक्का का एक रईस सुहैल नामी अनुबंध के लिए आपकी सेवा में हाज़िर हुआ और यह अनुबंध लिखा गया।

(उद्धरित दीबाचा तफ्सीरुल कुरआन अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 307-308)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का यह वर्णन अभी चल रहा है। बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

दुआओं की तरफ़ अब भी मैं तवज्जा दिलाना चाहता हूँ। पाकिस्तान के हालात के लिए विशेषता दुआ करें। घरों की चार-दीवारी में भी अब तो सुरक्षित नहीं हैं। अपनी जगहों पर भी सुरक्षित नहीं हैं। हर जगह जहां मौलवी कहता है पुलिस वाले पहुंच जाते हैं। कुछ शरीफ़ पुलिस वाले ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हमारी हमदर्दीयां आपके साथ हैं लेकिन हम क्या करें कि हमें प्रैशर इतना पड़ता है कि हमारे अफ़सर जो कहते हैं फिर हमें करना पड़ता है। तो अल्लाह तआला ऐसे बुरी फ़ितरत वाले आफ़सरों से भी हमारी जान छुड़ाए, देश की जान छुड़ाए और हर अहमदी को आज़ादी से और सुरक्षित तरीक़े पर अपने वतन में रहने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। विशेषता दुआएं करते रहें। इन्शा-अल्लाह तआला यह दुआएं यदि जारी रही तो जल्द हम देखेंगे कि विरोधी का अंजाम निहायत इबरतनाक होगा। अल्लाह तआला हमें दुआओं की भी तौफ़ीक़ दे और उन्हें क़बूल भी फ़रमाए ।

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad